सेन्ट्रल मंथन

• खंड 6 • अंक - 1 • जून, 2021

प्रोजेक्ट दिशा एवं उन्नति के मार्ग पर अग्रसर

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

29 जून 2021 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय ई राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर पोस्टर का विमोचन करते हुए दांये से श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक, श्री एम वी राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री राजीव पुरी, कार्यपालक निदेशक, श्री स्मृति रंजन दाश, महाप्रबंधक राजभाषा एवं श्री एस. आर. खटीक, फील्ड महाप्रबंधक मुंबई आं. का.

केन्द्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित द्वितीय ई राजभाषा सम्मेलन के दौरान मंच पर आसीन श्री एम. वी. राव, प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दाये श्री विवेक वाही, कार्यपालक निदेशक, बायें श्री राजीव पुरी, कार्यपालक निदेशक, पीछे खड़े महाप्रबंधक श्री मयंक शाह, श्री स्मृति रंजन दाश, श्री एस आर खटीक, फील्ड महाप्रबंधक एम एम जेड ओ, श्री वास्ति वेंकटेश, श्री एच एस गरसा, श्री गोपीनाथन एवं सुश्री नमिता रॉय शर्मा.

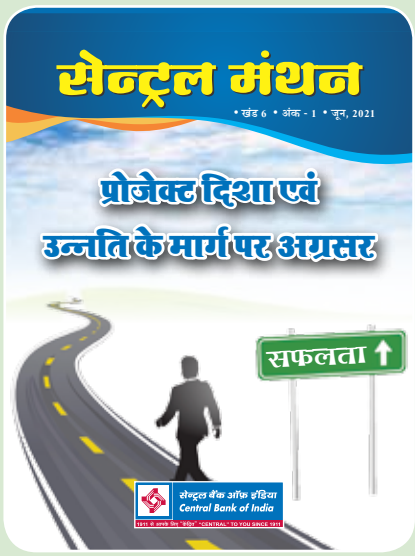

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका

• खंड 6 • अंक - 1 • जून, 2021

प्रधान संरक्षक

श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री आलोक श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक

श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक

श्री राजीव पुरी
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

श्री स्मृति रंजन दाश
महाप्रबंधक (मा सं वि / राजभाषा)

संपादक

श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

सुश्री छाया पुराणिक
सुश्री मधुलिका कांबले
श्री संजय व्यास

विषय-सूची

- प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 2
- कार्यपालक निदेशक का संदेश 3
- महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश 4
- संपादकीय 5
- सेंट्रल बैंक : एक नई 'दिशा' की ओर 6-7
- प्रोजेक्ट दिशा 8
- वित्तीय समावेशन के माध्यम से ग्रामीण भारत का आर्थिक विकास 9-10
- 'नेतृत्व-कौशल का महत्व और विशेषता' 11
- महिला सशक्तिकरण 12
- संस्मरण : मेहनत का फल 13
- सबरीमला 14-15
- कविता - ग़ज़ल 16
- कविता - ढूंढ रहा हूँ बचपन, कभी यूं भी तो हो 17
- नवीनतम तकनीक एवं बैंकिंग 18-19
- सम्मेलन फोटो 20-21
- लखनऊ के दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल 22-23
- गंगासागर 24
- राजस्थान के मेले 25
- अम्बुवाची पर्व 26
- देवी कनक दुर्गा मंदिर महोत्सव, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश (थेप्पोत्सवम) 27
- गांठ खुल गई 28-29
- फरिश्ता 30-31
- प्रतिज्ञा 32
- फोटोग्राफ 33-34
- सैयादों का मुखिया 35
- पाटलिपुत्र की नगर वधू 36
- स्वास्थ्य प्रबंधन 37-38
- रसोई घर से 39-40

ई-मेल/Email : centralmanthan@centralbank.co.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं।

डिज़ाइन, संपादित तथा प्रकाशित : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं.

हमारे प्रिय बैंक के लिए नए वित्त वर्ष का शुभारंभ नवीन आशा किरणों के साथ हुआ है. वित्त वर्ष 2021-22 की पहली तिमाही के परिणाम उत्साहवर्धक रहे हैं. मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत के प्रथम स्वदेशी बैंक को नयी दिशा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों का परिणाम नि:संदेह आशानुरूप सुखद ही होगा.

पूरे विश्व के साथ विगत वित्त वर्ष से प्रारंभ हुई कोविड-19 महामारी से उत्पन्न विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए भारत राष्ट्र में जब परिस्थितियां सामान्य होती जा रही थी तभी कोविड-19 की दूसरी लहर ने भयभीत करने का प्रयास किया था. इस गंभीर परिस्थिति पर शीघ्र नियंत्रण कर भारत अब पुन: तीव्र गति से सामान्य स्थिति की ओर बढ़ रहा है. तदापि स्थिति पूरी तरह ठीक होने तक हमें कोविड-19 के प्रोटोकाल का अनुपालन करना होगा. वैक्सीनेशन अवश्य करवाना होगा. जिससे सुरक्षा का भाव और दृढ़ होगा तथा हम और बेहतर तरीके से ग्राहक सेवा दे पाएंगे एवं व्यवसाय वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित कर पाएंगे.

बैंकिंग उद्योग में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का गौरवपूर्ण स्थान रहा है. हमें अब इस दिशा में ही आगे बढ़ना है. इसके लिए हमारी हर शाखा महत्वपूर्ण है. हमें प्रत्येक शाखा को लाभदायक केन्द्र के रूप में बनाने एवं उत्कृष्ट इकाई के रूप में विकसित करने का सफल प्रयास करना होगा. हर शाखा की टीम एक परिवार की तरह काम करे. शाखा प्रबंधक अपनी टीम को सही दिशा देकर लक्ष्य प्राप्त करें. शाखाएं अपने ग्राहकों से परिवार के सदस्यों की तरह जुड़े, अपने पुराने ग्राहकों को पुन: बैंक से जोड़े, नए ग्राहक बनाएं, ऐसे प्रयासों में शाखा के सभी सदस्यों की भागीदारी होनी आवश्यक है.

इस क्रम में क्षेत्रीय प्रबंधक एवं फील्ड महाप्रबंधक भी अपने क्षेत्र और अंचल के सदस्यों को सही दिशा में अच्छा कार्य करने के लिए निरंतर उचित मार्गदर्शन प्रदान करें. परिवार के प्रमुख की भांति हर क्षेत्र की टीम शाखाओं को उचित परामर्श, सुविधा, एवं सहयोग प्रदान करेंगी तो सभी शाखाएं लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ेगी. इसी तरह अंचल की टीम को बैंक की नीतियों, नियमों के अनुसार सभी शाखाओं का समुचित पथ प्रदर्शन करना होगा.

केन्द्रीय कार्यालय की टीम के सदस्य गण अंचल, क्षेत्र से निरंतर अनुवर्तन करें तथा शाखाओं, क्षेत्रों और अंचलों की प्रगति की निगरानी करें और उन्हें निरंतर प्रेरित एवं प्रोत्साहित करें. जब हम सब मिलकर सही दिशा में सही प्रगति करते हुए आगे बढ़ेंगे तब अपना लक्ष्य अवश्य प्राप्त करेंगे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(एम. वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

दुनिया का डर नहीं, जो तुझे उड़ने से रोके हैं, कैद है तू अपने ही नजरिए के पिंजरे में!! उससे बाहर निकल

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

हमारा बैंक व्यवसाय वृद्धि हेतु निरंतर प्रयत्नशील है. उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए हमारे बैंक द्वारा विकास हेतु व्यवसायिक परिवर्तन की दिशा में पहल की गई है. इसमें रिटेल तथा एमएसएमई योजनाओं को मजबूत करना, कृषि वित्त पर अधिक बल देना तथा कासा एवं शुल्क आधारित योजनाओं में वृद्धि सुनिश्चित करना है.

समय की आवश्यकता के अनुरूप डिजिटल बैंकिंग के अधिक से अधिक उपयोग हेतु प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए. हमारे विभिन्न डिजीटल उत्पाद ग्राहकों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं. शाखाओं को खुदरा, कृषि, एमएसएमई, कासा तथा शुल्क आधारित आय बढाने पर अधिक ध्यान देना आवश्यक है. इस संबंध में प्रक्रिया पद्धति को सक्षम बनाया गया है जिससे किसी भी प्रस्ताव की प्रक्रिया शीघ्रता से पूर्ण की जा सके तथा ऋण स्वीकृति प्रणाली ऑडिट अनुपालन के साथ सुव्यवस्थित हो.

शाखाओं/कार्यालयों को ऋण तथा वसूली हेतु प्रस्तावों की ट्रैकिंग तथा आईवीआरएस प्रद्धति के माध्यम से इसे प्रभावी बनाया जा रहा है. शाखाओं को संपूर्ण तकनीकी सहयोग का पूरा लाभ उठाना चाहिए जिससे यह कार्य व्यवस्थित रूप से संपन्न किया जा सके. शाखा में प्रत्येक ग्राहक का प्रोफाइल रखा जाना चाहिए जिससे क्रॉस सेलिंग में इसका उपयोग किया जा सके तथा नए लीड प्राप्त करते हुए व्यवसाय वृद्धि में इसका उपयोग हो. हमारे उत्पादों की बिक्री तथा विपणन हेतु नए वैकल्पिक डिलीवरी चैनलों के सहयोग से हमारा ग्राहक आधार बढाया जाना चाहिए. खुदरा बिक्री, कृषि तथा एमएसएमई हेतु जोखिम प्रबंधन के साथ-साथ हमारी आस्तियों की गुणवत्ता भी बनाए रखते हुए ऋण पुनर्भुगतान की निगरानी हेतु ठोस वसूली तंत्र बनाया जाना अपेक्षित है.

शाखा के सभी सदस्यों को टीम भावना से कार्य करते हुए हमारे सभी व्यावसायिक मापदंडों (रिटेल, कृषि, एमएसएमई, कासा तथा शुल्क आधारित आय) में संभावनाओं का पूर्ण उपयोग किया जाना चाहिए. शाखाओं द्वारा उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करके हमारे बैंक की छवि बेहतर बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हमें बेहतर व्यवसाय प्राप्त होगा तथा हमारे ग्राहक भी हमारे विभिन्न उत्पादों से संतुष्ट होंगे.

हाल ही डिजिटल में बैंक द्वारा जीरो बेलेन्स के साथ चालू खाता खोलने हेतु 'सेन्ट सक्षम' योजना प्रारंभ की गई है. हमारी सेन्ट शॉप सावधि ऋण योजना को भी संशोधित करते हुए इसे व्यवसायियों में लोकप्रिय बनाया जा रहा है. उसी प्रकार एमएसएमई के अंतर्गत उमंग योजना आकर्षक ब्याज दरों पर उपलब्ध कराई है जिसमें ऋण आवेदनों का डिजिटल प्रोसेसिंग होगा.

एमएसएमई की प्रगति, देश की शक्ति के अंतर्गत 'सेन्ट प्रगति' योजना में उत्पादक ट्रेडर्स/सेवा प्रदाता, एग्रो फूड प्रोसेसिंग में श्रेष्ठ सुविधाओं एवं शर्तों पर ऋण उपलब्ध है. उसी प्रकार 'एमएसएमई नई पहल' के अंतर्गत अत्यधिक स्पर्धात्मक और आकर्षक ब्याज दर पर ग्राहकोपयोगी शानदार ऋण प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए है. इसमें प्रसंस्करण शुल्क में रियायत का भी लाभ दिया जा रहा है.

सभी सेन्ट्रलाइट मिलकर लक्ष्य की दिशा में आगे बढे तथा अपने प्रिय बैंक को उन्नति के पथ पर अग्रसर करें.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

आलोक श्रीवास्तव
कार्यपालक निदेशक

महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय साथियो,

भारत के प्रथम स्वदेशी बैंक को उन्नति के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर करने के लिए उच्च प्रबंधन द्वारा निरंतर नई पहल की जा रही है. पद्धति एवं प्रक्रिया को नई दिशा दी जा रही है. कार्मिको के उत्साहवर्धन हेतु भी निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं.

हम सुदृढ़ आधार वाले पारंपारिक बैंक हैं, जो पूरे भारत में एक सौ नौ वर्षों से भी अधिक समय से समाज के सभी वर्गों को वित्तीय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं. हम सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख बैंक हैं. सामाजिक दायित्व के निर्वहन के साथ-साथ हम एक व्यवसायिक बैंक भी हैं. अत: हमें निरंतर प्रगति की दिशा में आगे बढ़ना होगा. हर स्तर पर व्यवसाय की वृद्धि करना तथा लाभार्जन करना भी हमारा उद्देश्य है.

हमारी हर शाखा / कार्यालय एक लाभदायक केन्द्र बने इसलिए हमें इस दिशा में सार्थक प्रयास करने चाहिए. हमारे प्रयास परिणामदायक होने चाहिए. इसके लिए आवश्यक है कि उच्च प्रबंधन द्वारा बैंक की प्रगति के लिए निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु जो दिशा तय की गई है, हमारी शाखाएं, क्षेत्र एवं अंचल एक टीम के रूप में उस पर आगे बढ़ें. शाखा के सभी सदस्य परस्पर सहयोग करते हुए अपनी ग्राहक सेवा को उत्कृष्ट बनाएं. साथ ही, प्रयास करें कि हमारे पुराने ग्राहक जो किसी भी कारण हमसे अलग हो गए थे, पुन: हमसे जुड़ें. इसके साथ-साथ हमारे वर्तमान ग्राहक हमारी सेवाओं से पूर्ण संतुष्ट हों, जिससे उनके सभी परिवार सदस्यों को स्वत: हमसे जुड़ने का आकर्षण हो.

बैंक की प्रगति के उद्देश्य से शाखा का हर सदस्य कार्य करें. शाखा प्रबंधक अपनी टीम के सदस्यों को कुशलतापूर्वक नेतृत्व प्रदान करें, उन्हें प्रेरित करें और अपनी शाखा को श्रेष्ठतम शाखा के रूप में स्थापित करें. जब प्रत्येक शाखा इस दिशा में कार्य करेगी तो हमारा बैंक सफलता के शीर्ष पर स्थापित होगा.

आने वाले पर्वों की हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

स्मृति रंजन दाश
महाप्रबंधक - राजभाषा

व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं, अपितु उसके चरित्र से आंकी जाती है।

संपादकीय

प्रिय साथियो,

व्यक्ति अपने जीवन के लिए कुछ लक्ष्य, दिशा और उद्देश्य निर्धारित करता है क्योंकि जीवन की सार्थकता अच्छे उद्देश्य के साथ कार्य करके बडे लक्ष्य की प्राप्ति मानी जाती है. एक व्यक्ति के लिए अच्छे उद्देश्य का निर्धारण करना कभी भी कठिन नहीं होता है. लेकिन इस उद्देश्य से संबंधित बडे लक्ष्य को प्राप्त करना अधिकांश अवसरों पर बहुत सरल भी नहीं होता है. अपने लिए व्यक्तिगत स्तर पर ऐसे प्रयास अधिकांशत: सभी लोग करते हैं.

इस क्रम में अपने व्यक्तिगत उद्देश्य से अथवा अन्यथा एक व्यक्ति जब किसी संस्था के लिए कार्य करता है तब संस्था के हित उसके लिए सर्वोपरि हो जाते हैं. हर संस्था का अपना उद्देश्य होता है. अपने उद्देश्य के अनुरूप संस्था द्वारा लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं. तत्पश्चात निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्यनीति तैयार की जाती है. इसके लिए सर्वोच्च प्रबंधन द्वारा एक दिशा भी निर्धारित की जाती है. संस्था के कार्मिकों को उस दिशा में सुनिश्चित गति से कार्य करते हुए लक्ष्य प्राप्त करना होता है. यह एक नियमित प्रक्रिया होती है. अलग-अलग कार्यो एवं गतिनिधियों तथा विभिन्न विभागों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं. उन कार्यो एवं गतिनिधियों से संबंधित कार्मिक तदनुसार दिशा में आगे बढते हैं और लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयास करते हैं. उनके लगन एवं निष्ठापूर्वक किए गए अच्छे प्रयास सदैव सुखद परिणाम प्रदान करते है.

जैसे एक भवन का निर्माण विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे ईंट, पत्थर, लोहा, सीमेंट, लकडी आदि के परस्पर सामंजस्य से होता है तथा फिर पूरी दृढता के साथ उनका अर्थात समस्त सामग्रियों को सामंजस्य सहित साथ में रहना, उस भवन के अस्तित्व को स्थाईत्व प्रदान करते है. अन्यथा भवन निरंतर दुर्बल होता जाएगा और उसकी आयु निरंतर कम होती जाएगी. उसी प्रकार एक संस्था अपने सभी वर्गो, स्तरों के कार्मिकों से बनती है तथा कार्मिकों के परस्पर सामंजस्य और तालमेल के साथ कार्य करने से संस्था में स्थाईत्व आता है. संस्था में हर वर्ग के कार्मिकों द्वारा अपने दायित्व के अनुसार निर्धारित दिशा में कार्य करने से संस्था के लिए परिणाम सदैव बेहतर होता है.

जब संस्था के सभी कार्मिक सही दिशा में एक टीम के सदस्य के रूप में परस्पर तालमेल के साथ निष्ठापूर्वक कार्य करेंगे तो संस्था की प्रगति सुनिश्चित हो जाती है. यही हर संस्था का उद्देश्य होता है. एक कार्मिक को यह ध्यान रखना चाहिए कि संस्था की प्रगति में ही उसका हित निहित है. संस्था आगे बढेगी तब ही कार्मिक आगे बढेगा. संस्था लाभ अर्जित करेगी तो कार्मिक की सुविधा बढेगी. वेतन और भत्ते बढेंगे. तदनुसार हर कार्मिक को संस्था का उद्देश्य, दिशा और लक्ष्य को समझना चाहिए एवं इसके अनुरूप कार्य करना चाहिए.

अभिवादन सहित

राजीव वार्ष्णेय

सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

सेंट्रल बैंक : एक नई 'दिशा' की ओर

- शालीन श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक
सूचना और डेटा विश्लेषण,
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

- हमारे बैंक में हाल ही में 'सेंट एरो' नाम का कार्यक्रम शुरू किया गया है जिसका मूल आधार है - 'एनालिटिक्स' जो हिंदी में 'विश्लेषणविद्या' के नाम से प्रचलित है
- आजकल आपने अनुभव किया होगा कि जब भी आप इंटरनेट पर कुछ 'खोज' करते हैं, उदाहरण के लिए आपने 'डाइनिंग टेबल' को 'खोज' किया... इस्के बाद थोड़ी देर बाद अगर आप कोई दूसरी वेबसाइट पर किसी भी काम के लिए जाते हैं, तो आपको उस पुराने 'खोज' के आधार पर जगह जगह पे 'अनुशंषा' आने लगते हैं - जैसे की डाइनिंग टेबल के लिए आपको विज्ञापन दिखने लगेंगे - अमॅझॉन, फ्लिपकार्ट गोदरेज इंटेरियो, पेपरफ्राई, अर्बन लैडर आदि।
- ये कैसे संभव है? ये सब विश्लेषणविद्या (Analytics) के आधार पर एनएलपी (प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण) के द्वारा मुमकिन है.
- चलिए, अब हम बात करते हैं कि कैसे विश्लेषणविद्या सेंट्रल बैंक को एक नई दिशा की ओर ले जाएगी
- हमने लीड्स जनरेट करने के लिए एनालिटिक्स का प्रयोग किया
- सबसे पहले हमने रिटेल के लिए ठस्कोरकार्ड बनायाठ और अच्छे क्रेडिटवर्थी कस्टमर्स का चयन किया
- स्कोरकार्ड बनाने में हमने निम्नलिखत पैरामीटर्स को वेटेज दिया:

	रिटेल (आवासीय ऋण)	रिटेल (वाहन ऋण)
1) उम्र	25%	25%
2) स्थान	20%	20%
3) विंटेज	30%	25%
4) लाएबिलिटी बैलेंस	15%	20%
5) प्रोडक्ट होल्डिंग	10%	10%

- 'एग्री' और 'एमएसएमई' स्कोरकार्ड बनाने में हमने निम्नलिखत पैरामीटर्स को वेटेज दिया:

	एग्री	एमएसएमई
1) विंटेज	20%	20%
2) इंटरनल रेटिंग	15%	15%
3) स्वीकृत राशि	25%	25%
4) एसएमए आवृत्ति	20%	20%
5) प्रोडक्ट होल्डिंग	20%	20%

- स्कोरकार्ड से फाइनल स्कोर मिलने के बाद, हमने खातों की वेटेज के आधार पे स्कोरिंग करी - 0 से 5 के बीच में।
- इनमे से जिन खातों का स्कोर 4 या 4 से ऊपर आता है, उसे पहले हम सिबिल स्क्रबिंग (CIBIL Scrubbing) के लिए देते हैं
- इनमे से जिस्का सिबिल स्कोर 700 से ऊपर आता है, उन्हे हम विश्लेषण के लिए 'प्रशिक्षण डेटा' (Training Dataset) के रूप में चुनते हैं
- इन चुने हुए खातों पे मशीन लर्निंग की तकनीक लगायी जाती है और एक गणितीय मॉडल बनकर तयार हो जाता है
- किसी भी एमएल (ML) मॉडल को बनाने के लिए 3 कदम होते हैं
  - Data Processing (डाटा प्रासेसिंग)
  - Choosing Algorithm (एल्गोरिथम चुनना)
  - Optimization of Model (मॉडल का अनुकूलन)

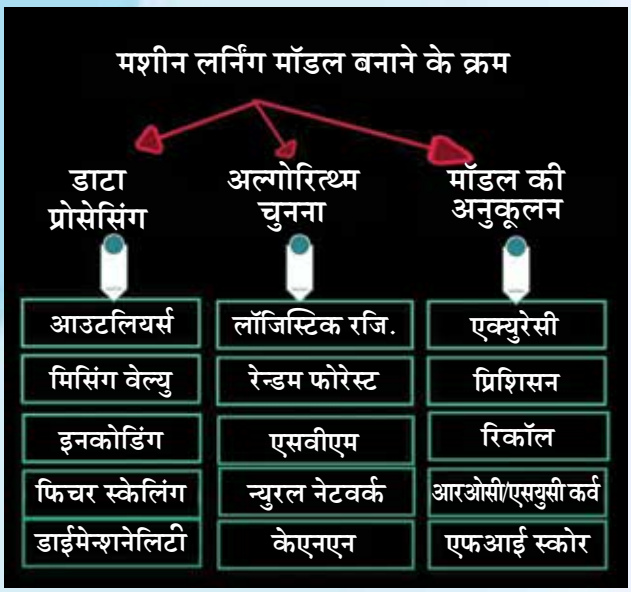

- इस चुने हुए मॉडल को हम 'टेस्ट डेटा' से सत्यापित/Verify करते हैं
- केवल उन्हीं चुने हुए खातों को कॉल सेंटर भेजा जाता है कॉल सेंटर से पता चलता है की ग्राहकों को किस तरह की लोन की जरूरत है
- उसके बाद इस छटे हुए "सबसे अच्छे ग्राहक" की सूची को क्षेत्रीय कार्यालय की 'मार्केटिंग' टीम (RSM – क्षेत्रीय सेल्स प्रबंधक) को भेजा जाता है
- कॉल सेंटर से सीधा लैण्डसेफ पोर्टल में ये "हाई क्वालिफाइड लीड्स" अपलोड हो जाती है
- इस्से शाखा प्रबंधक को काफ़ी सुविधा मिलती है जो अपनी शाखा को "असाइन किए गए लीड्स" को फॉलो अप करके व्यवसाय में कनवर्ट करते हैं।
- इस तरह से "क्रेडिटवर्थी" कस्टमर्स का लोन भी होता है और साथ ही ब्रांच का बिजनेस भी बढ़ जाता है
- इस तरह से हमें 3 प्रकार के अच्छे ग्राहक मिल जाते हैं - "कोल्ड", "वार्म" और "हॉट" लीड्स।

1	"कोल्ड" लीड्स	ऐसे ग्राहक जो अभी इच्छुक नहीं हैं ऋण लेने में पर आगे जाकर वो ऋण ले सकते हैं
2	"वार्म" लीड्स	ऐसे ग्राहक जो 1 महिने के बाद लोन लेने में इछुक हैं
3	"हॉट" लीड्स	ऐसे ग्राहक जिन्को तुरंत ऋण चाहिए (1 महिने के अंदर)

तरह तरह के मॉडल हैं एनेलेटिक्स मे :

- के-मीन्स क्लस्टरिंग
- एस व्ही एम (सपोर्ट वेक्टर मशीन)
- कलेकटिव फिल्टरिंग
- रिकमन्डेशन इंजिन
- रेन्डम फॉरेस्ट अन्य

अलग अलग मॉडल का प्रयोग करके धीरे धीरे " सेंट एरो " प्रोजेक्ट को पूरे बैंक में लागू किया जाएगा ... हम आशा करते हैं की हम सब मिल्कर, एक नई दिशा की ओर चलेंगे और अपने बैंक का नाम रोशन करेंगे...

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3.3. के अनुसार निम्नलिखित कागजात द्विभाषिक जारी किये जाने हैं:- संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन, संसद में प्रस्तुत प्रशासनिक पत्र तथा प्रतिवेदन एवं सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्ति, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएँ, निविदा फार्म

प्रोजेक्ट दिशा

- घनश्याम दास अहिरवार
मुख्य प्रबन्धक, संकाय सदस्य
एसपीबीटी महाविद्यालय

प्रोजेक्ट दिशा क्या है?

- प्रोजेक्ट दिशा एक विश्लेषणात्मक आधार बिजनेस परिवर्तन प्रोग्राम है जिसे हमारे बैंक में फरवरी 2020 में प्राइस-वाटर-हाउस-कूपर, प्रोग्राम के सलाहकार के सहयोग से शुरू किया गया है.
- इस परियोजना को बैंक में 18 महीनों में चरणों में लागू किया जाना है.
- परियोजना के संस्थापक स्तंभ उर्जा, परिवर्तन और निरंतरता हैं.

परियोजना का व्यापक दायरा -

(ए) व्यापार वृद्धि - खुदरा, कृषि, एमएसएमई क्रेडिट, कासा, शुल्क आधारित आय में व्यापार के विकास को स्थायी आधार पर बढ़ावा देने के लिए नई व्यावसायिक पहल करना.

(बी) व्यापार प्रक्रिया - बेहतर दक्षता और स्थिरता के लिए व्यावसायिक प्रक्रियाओं को फिर से बनाना.

(सी) ग्राहक अनुभव - टर्न अराउंड टाईम और ग्राहकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए विश्लेषणात्मक और डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना, जिससे ग्राहकों के अनुभव में सुधार हो.

(डी) जोखिम शमन - परिसंपत्तियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रियाओं को बदलने के लिए मजबूत जोखिम शमन उपायों का निर्माण.

प्रोजेक्ट का उद्देश्य -

1. शाखाओं को संचालन के बोझ से मुक्त करने के लिए.
2. बिक्री गतिविधियों, वसूली और बेहतर ग्राहक अनुभव के लिए शाखाओं को केंद्र बिंदु बनाना.

प्रोजेक्ट दिशा का मुख्य आकर्षण -

1. खुदरा, कृषि और एमएसएमई वित्तपोषण में उत्कृष्टता का निर्माण.
2. जोखिम प्रबंधन क्षमताओं का निर्माण.
3. लीड प्रबंधन के लिए विश्लेषणात्मक मॉडल और डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना.
4. वसूली और संग्रह के लिए ढांचा तैयार करना

कार्यान्वयन के लिए उपकरण -

01 - प्रक्रिया स्वचालन
02 - संचालन और नियंत्रण तंत्र को सुव्यवस्थित करना
03 - विश्लेषणात्मक आंकड़े और व्यापारिक सूचना
04 - कृत्रिम बुध्दिमत्ता और मशीन लर्निंग

प्रक्रिया स्वचालन -

डिजिटल को मजबूत बनाने के माध्यम से - प्रक्रिया के लिए रोड मैप और स्वचालन इस प्रकार है.

- शाखा स्तर पर गैर-उत्पादक प्रक्रियाओं को स्वचालित करना.
- प्रत्यक्ष डिजिटल खाता खोलना, सक्रियण, वीडियो केवाईसी.
- कार्य प्रवाह स्वचालन और प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना.
- शाखा स्तर पर ग्राहक रूपरेखा के लिए प्रभावी डैशबोर्ड.
- बेहतर क्रेडिट हामीदारी निर्णय लेने में सहायता के लिए विश्लेषणात्मक मॉडल

प्रक्रिया स्वचालन -

- लेंडसेफ (सुरक्षित उधार देने) के माध्यम से - शुरू से अंत तक ऋण जीवन चक्र प्रबंधन प्रणाली.
- ग्राहकों की पहचान, आईटी और वित्तीय विवरणों के सत्यापन को पूरा करता है.
- योग्यता की गणना.
- दस्तावेज़ीकरण.
- शाखा और स्वीकृति प्राधिकारी के बीच डाटा और दस्तावेजों का मुक्त प्रवाह.
- हितधारकों को प्रभावी अलर्ट.
- संग्रह प्रबंधन.

व्यवस्थित बनाने की प्रक्रियाएं - प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के प्रक्रिया शोधन के माध्यम से लिए निम्नलिखित चरणों को अपनाना होगा.

- खुदरा, कृषि, एमएसएमई, कासा और शुल्क आधारित आय के लिए क्षेत्रीय कार्यलय में समर्पित बिक्री केंद्र.
- टर्न अराउंड टाईम में कमी के लिए सी.पी.ए.सी. में प्रोसेसिंग सेल की फाइन ट्यूनिंग.
- प्रभावी नेतृत्व प्रबंधन और ट्रैकिंग प्रणाली.
- व्यवस्थित लेखा परीक्षा अनुपालन.
- ट्रैकिंग (नजर रखना) और आउटबाउंड (सीमा से बाहर) आईवीआरएस (इंटरैक्टिव वॉयस रिस्पांस सिस्टम) के माध्यम से प्रभावी वसूली/संग्रह तंत्र

आंकड़ों का विश्लेषण और व्यापारिक सूचना
आंकड़ों का विश्लेषण क्या है -

- आंकड़ों का विश्लेषण शब्द का तात्पर्य डाटा सेट की जांच करने की प्रक्रिया से है, जिसमें उनमें मौजूद जानकारी के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है.
- डाटा विश्लेषण की तकनीकें आपको कच्चा डाटा लेने और उससे मूल्यवान अंतर्दृष्टि निकालने के लिए प्रतिरूपों को उजागर करने में सक्षम बनाती हैं.

आंकड़ों का विश्लेषण और बैंकिंग -

- बैंक में डिजिटल लहर ने बैंकिंग कार्यों में क्रांति ला दी है.
- बैंकिंग में डाटा विश्लेषण और कृत्रिम बुध्दिमत्ता की अपार संभावनाएं हैं.
- बैंकों में आंकड़ों का विश्लेषण ग्राहकों के अनुकूलन और लागत में कटौती के दरवाजे खोल रहा है.
- प्रोजेक्ट दिशा का बिजनेस आर्किटेक्चर (व्यापार वास्तुकला) -

संबंधित आरएसएम समर्पित बिक्री बल को और आरएसएम क्षेत्रीय प्रमुखों को रिपोर्ट करेगा, क्षेत्रीय प्रमुख मुख्य विपणन अधिकारी को और केंद्रीय कार्यालय के विपणन टीम को रिपोर्ट करेगा. एक नया लीड प्रबंधन उपकरण इन-हाउस में विकसित किया गया है जो नई लीड और इसकी प्रगति की निगरानी में मदद करेगा.

महानता कभी ना गिरने में नहीं है, बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।

वित्तीय समावेशन के माध्यम से ग्रामीण भारत का आर्थिक विकास

-आनंद शर्मा
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

हमारी प्रगति की कसौटी इसमें नहीं कि हम उन लोगों को समृद्ध बनाएं जो कि पहले से ही समृद्ध हैं, बल्कि उन्हें जो अल्प साधन वाले हैं, क्या हम उन्हें पर्याप्त मात्रा में साधन उपलब्ध करा पाते है।

अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट का उक्त कथन भारत के ग्रामीण इलाकों के आर्थिक विकास के परिपेक्ष्य में सार्थक प्रतीत होता है। आज जब हम भारतीय अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन के मुकाम तक पहुंचाने व भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर द्रुत गति से अग्रसर है, यह तभी संभव होगा जब हम अपने ग्रामीण भारत का पूर्णत: समावेशी आर्थक विकास कर सकेंगें। इसके लिए वित्तीय समावेशन एक बेहतर विकल्प प्रतीत होता है।

वित्तीय समावेशन से तात्पर्य, समाज के वंचित वर्ग को कम कीमत पर भुगतान, बचत, ऋण आदि वित्तीय सेवाएं पहुंचाने का प्रयास है। इसका प्रमुख उद्देश्य उन प्रतिबंधों को दूर करना है जिनके कारण वित्तीय क्षेत्रों में सहभागिता से आम नागरिकों को कठिनाई अनुभव होती और किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वित्तीय सेवाओं को उपलब्ध कराना है।

ग्रामीण आर्थिक विकास में बैंकों की भूमिका : भारत में स्वतंत्रता के पश्चात बैंकिंग तंत्र का शहरी क्षेत्रों में जितनी तेजी से विकास हुआ है उतना ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं हुआ है। वर्ष 1969 के बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात ग्रामीण क्षेत्रों में चुनिंदा स्थानों पर वाणिज्यिक बैंकों की शाखाएं खुली। 1970 के दशक में वंचितों/ गरीबों और ग्रामीण क्षेत्र के पिछड़े तबके को मद्दे नजर रखते हुए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना की गई। इन ग्रामीण बैंकों के लिए प्राथमिकता क्षेत्र पहले ही निर्धारित कर दिए गए थे। इन्हें उन लोगों को कर्ज देने का कार्य सौंपा गया, जिनके पास प्रतिभूतिस्वरूप कुछ नहीं था। परन्तु, अनुदान को चट कर जाने वाले दलालों, बिचौलियों तथा भ्रष्ट नौकरशाहों के कारण इसका लाभ वास्तविक व्यक्ति (लाभार्थी) तक नहीं पहुंच सका।

वित्तीय समावेशन की आवश्यकता : ग्रामीण भारत में वित्तीय समावेशन की आवश्यकता को हम निम्नांकित रूप में विस्तार दे सकते हैं -

- गांवों में निरक्षर व कम पढ़े-लिखे लोग वित्तीय समावेशन के अभाव में बैंकों आदि की सुविधाओं से वंचित रहते हैं व वित्त के अनौपचारिक साधनों से जुड़ने को मजबूर हो जाते हैं। जहां पर ब्याज की दरें भी अधिक होती है और उधार दी गई राशि भी आवश्यकता के अनुरूप नहीं होती है।
- अनौपचारिक बैंकिंग ढांचा कानून की परिधि से बाहर होता है। अत: ऋण देने व लेने वालों के मध्य उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद वैध कानूनी माध्यम से निपटाया जाना कठिन प्रतीत होता है।

- वित्तीय समावेशन न केवल ऋण को आसान बनाता है बल्कि बचत करने व भविष्य के लिए अपने व अपने परिवार को वित्तीय जोखिम से भी बचाता है।
- वित्तीय समावेशन से सरकार को सरकारी अनुदान तथा अन्य कल्याणकारी कार्यक्रमों में अंतराल एवं हेरा-फेरी पर भी रोक लगाने में भी मदद मिलती है क्योंकि इससे सरकार उत्पादों पर अनुदान देने के बजाय उस राशि को सीधे लाभार्थी के खाते में अंतरित कर सकती है।
- वित्तीय समावेशन से देश को 'पूंजी निर्माण' की दर में वृद्धि करने में सहायता प्राप्त होती है और इसके फलस्वरूप देश के कोने-कोने से होकर धन का मार्गीकरण कराकर अर्थव्यवस्था में अन्य आर्थिक क्रियाकलापों का भी संवर्द्धन होता है।

ग्रामीण भारत में आर्थिक विकास के लिए वित्तीय समावेशन हेतु भारत सरकार/ भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए मुख्य प्रयास निम्नानुसार है -

- **प्रत्यक्ष लाभ अंतरण** - इसके तहत अनुदान या अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थी के खाते में पहुंचाया जाता है, जिससे उसमें रिसाव या भ्रष्टाचार की संभावना न्यूनतम हो।
- **प्रधानमंत्री जनधन योजना** - इसके तहत अधिकांश परिवारों को देश की औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ा गया है ताकि वे प्रत्यक्ष लाभ अंतरण से लाभान्वित हो सके।
- **पेमेंट व लघु वित्त बैंकों को लाइसेंस प्रदान करना** - ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने और लघु कारोबारियों, छोटे और मंझले स्तर के किसानों एवं अन्य असंगठित क्षेत्र के उद्यमों को ऋण की आपूर्ति करने के उद्देश्य से इन बैंकों की स्थापना की गई है।
- **स्वंय सहायता समूह बैंक लिंकेज मॉडल** - राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा 1992 में ग्रामीण निर्धनों के 500 स्वंय सहायता समूहों के साथ एस एच जी बैंक लिंकेज प्रोग्राम की शुरूआत की गई थी जो विश्व की सबसे बड़ी माइक्रोफाइनेंस पहल बन चुकी है। यह ग्रामीण महिलाओं को ऋण प्रदान करने का प्रमुख जरिया बन चुका है।
- **माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से ग्रामीण सशक्तिकरण** - यह सत्य है कि किसी को रोटी देने से बेहतर है उसे रोटी कमाना सिखाया जाए। माइक्रोफाइनेंस से गरीबों को आवश्यक कौशल और संसाधन प्राप्त होते हैं, जिससे कि वे लाभकारी गतिविधियों को संपादित करने एवं गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकलने में कामयाब हो सकते हें। इसके तहत सरकार का मंतव्य यह रहा है कि निर्धनतम व्यक्तियों को बैंकिंग/एनबीएफसी के माध्यम से वित्तीय सुविधाएं न्यून ब्याज दरों पर सुगमता से उपलब्ध कराई जाए।
- **जनधन-आधार-मोबाईल संयोजन (जे ए एम त्रिनिटी)** भारत सरकार ने एक दूरगामी सोच के तहत मोबाईल नम्बर को जनधन खाते/ बचत खाते व आधार कार्ड से लिंक करने का बेहतरीन कार्य किया है, जिससे कि तीनों (खाता, मोबाईल एवं आधार) से लिंक सेवाओं/ सुविधाओं को एकीकृत रूप देकर अनपढ़ ग्रामीणों को बायोमेट्रिक फिंगरप्रिंट्स के माध्यम से ए टी एम/ बी सी / बी एफ में से किसी भी विकल्प के द्वारा अपने खाते में नकद निकासी व अन्य वित्तीय सुविधा का लाभ दिया जा सके।

वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सार्थक पहल करते हुए करेंसी मेटर्स और बैंक मेटर्स नाम से कॉमिक बुक का प्रकाशन किया गया है। इसी प्रकार राजू और मनी-ट्री नामक पुस्तक का भी प्रकाशन किया गया। स्कूली बच्चों को वित्तीय साक्षर बनाने के लिए पोस्टर, पुस्तिकाओं, विडियो फिल्मों, प्रदर्शनी जैसे माध्यमों का सहारा लिया जा रहा है।

अभी भी वित्तीय समावेशन और गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में अब तक किये गए महत्वपूर्ण कार्यों में बाधक कारकों पर यदि हम प्रकाश डालना चाहें तो हम पायेंगें कि वर्तमान में बैंकिंग प्रणाली में उपलब्ध संसाधनों की तुलना में उससे बहुत ज्यादा अपेक्षाएं की जा रही है, जैसे - आधार पंजीकरण, जीवन व गैर बीमा उत्पादों को बेचना, कर संग्रहण व पेंशन उत्पादों से संबंधित प्रशासनिक कार्य आदि। परन्तु इन सब से उनका मुख्य धारा का कार्य जैसे ऋण वितरण, आस्तियों की गुणवत्ता को बनाये रखना, सेवा मानकों के अनुरूप सेवा प्रदान करना, वित्तीय साक्षरता को बढ़ाना जैसे प्रमुख उत्तरदायित्वों का अतिक्रमण हो रहा है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में इन्फ्रांस्ट्रक्चर (इन्टरनेट, विद्युत एवं संचार) एवं रोजगारोन्मुख कार्यक्रमों का अभाव भी वित्तीय समावेशन की डगर में बाधक है।

किसी भी विकासशील देश के वित्तीय ढांचें में ऋण माफी एवं छूट जैसी अवधारणाएं न केवल बैंकों की ऋण उपलब्धता को सीमित करता है अपितु आम जन के मन में ऋण चुकौती न करने की भावना को प्रोत्साहित करता है।

विगत समय में यह पाया गया है कि सहकारी क्षेत्र जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में एक अहम भूमिका अदा करता है में भारतीय रिजर्व बैंक/ भारत/ राज्य सरकार का कमजोर नियंत्रण एक अहम मुद्दा बनकर उभरा है, जिस हेतु शीघ्र कदम उठाये जाने आवश्यक हैं, जिससे बैंकिंग प्रणाली में आम जनता में विश्वास कायम हो सके।

सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि बैंकिंग प्रणाली के विभिन्न चरणों पर यदि दृष्टिपात करें तो वित्तीय समावेशन की अवधारणा ने हमारे ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्र के आमजन को न केवल बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई है अपितु उन्हें वित्तीय साक्षर करने जैसा भागीरथ प्रयास किया है।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार
हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है.

'नेतृत्व-कौशल का महत्व और विशेषता'

- राजीव तिवारी,
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय पुणे

प्रबंधन का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग 'नेतृत्व-कौशल' होता है जो कार्मिकों की दक्षता को अधिकतम करने और संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में निर्णायक भूमिका निभाता है. अक्सर किसी संगठन की सफलता का कारण उसके नेतृत्व दल को माना जाता है. लेकिन, किसी को यह नहीं भूलना चाहिए कि वास्तविक सफलता उन अनुकरणीय कार्मिकों की होती है जो अपने नेतृत्व को स्वीकार करके लक्ष्यों को प्राप्त करते है. इस प्रकार देखा जाए तो सामूहिक रूप से मार्गदर्शी नेतृत्व और अनुकरणीय कार्मिक ही किसी संगठन को सफल बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा किसी संगठन में कुशल नेतृत्व के महत्व को न्यायोचित ठहराया जा सकता है :

- **प्रारंभिक कार्रवाई** - नेतृत्वकर्ता द्वारा ही अधीनस्थों मे नीतिगत योजनाओं का संचार करके कार्य प्रारंभ किया जाता है.
- **प्रेरणा** - प्रेरणा एक व्यक्ति के जीवन में प्रेरक शक्ति होती है. किसी भी संगठन में कार्मिकों को कार्य-लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना महत्वपूर्ण है. इस कार्य को नेतृत्वकर्ता द्वारा इस प्रकार संप्रेषित किया जाता है ताकि कर्मचारियों को आर्थिक और गैर-आर्थिक पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो सके और अधीनस्थों द्वारा अधिकतम प्रतिफल प्राप्त किया जा सके.
- **मार्गदर्शन प्रदान करना** - प्रभावी नेतृत्वकर्ता को न केवल पर्यवेक्षण करना होता है बल्कि अधीनस्थों के लिए मार्गदर्शक भूमिका भी निभानी होती है. यहां मार्गदर्शन का अर्थ अधीनस्थों को अनुदेशित करना है कि किस तरह वे अपने काम को प्रभावी और कुशलतापूर्वक कर पाएं.
- **आत्मविश्वास पैदा करना** - प्रभावी नेतृत्वकर्ता के लिए यह भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसे अधीनस्थों के कार्य-प्रयासों को व्यक्त करके प्राप्त किया जा सकता है, अधीनस्थों को स्पष्ट रूप से उनकी भूमिका समझाते हुए उन्हें लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने के लिए दिशा-निर्देश दिए जा सकते हैं. कर्मचारियों की शिकायतों और समस्याओं का त्वरित निदान किया जाना भी महत्वपूर्ण है ताकि संगठन के प्रति कार्मिकों का विश्वास स्थापित हो सके.
- **मनोबल का निर्माण** - कर्मचारियों का विश्वास जीतना तथा उनके मनोबल को बढ़ाने का कार्य नेतृत्वकर्ता के लिए बहुत आवश्यक होता है. किसी कर्मचारी का मनोबल उसके कार्य के प्रति रूझान और सहयोग को दर्शाता है ताकि वे अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम प्रदर्शन कर निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में अग्रणी भूमिका निभा सके.
- **कुशल कार्य वातावरण निर्मित करना** - किसी संगठन के स्थिर विकास के लिए यह अनिवार्य होता है कि नेतृत्वकर्ता द्वारा आंतरिक कार्मिकों के मध्य मानवीय संबंधों को और गहरा किया जाए. कर्मचारियों के साथ नेतृत्वकर्ता का व्यक्तिगत संपर्क होना चाहिए और मानवीय शर्तों पर कर्मचारियों के साथ व्यवहार करना चाहिए. एक सकारात्मक और कुशल काम वातावरण संगठन के विकास में मदद करता है.
- **समन्वय**- संगठनात्मक लक्ष्यों के साथ व्यक्तिगत हितों का मिलान करके समन्वय प्राप्त किया जा सकता है. इस समकालिकीकरण को उचित और प्रभावी समन्वय के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है तथा यह नेतृत्वकर्ता का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए.

एक सफल नेतृत्वकर्ता के गुण

- **व्यक्तित्व :** एक मनभावन व्यक्तित्व हमेशा लोगों को आकर्षित करता है. एक नेतृत्वकर्ता को मित्रवत् और आधिकारिक होना चाहिए ताकि वह लोगों को उसकी तरह कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित कर सके.
- **ज्ञान :** यह अंतर्निहित ही है कि आवश्यकता के समय अधीनस्थ अपने नेतृत्वकर्ता से परामर्श लेने का प्रयास करते है. अत: इस प्रकार अधीनस्थों को प्रभावित करने के लिए एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के पास पर्याप्त ज्ञान और क्षमता होनी चाहिए.
- **अखंडता :** एक नेतृत्वकर्ता को संगठन में उच्च स्तर की अखंडता बनाए रखने के लिए ईमानदार अधिकारी की आवश्यकता होती है. अत: उसका दृष्टिकोण उचित होना चाहिए और तथ्यों और तर्क के आधार पर ही अपने फैसले लेने चाहिए. सामान्यत: उसे निष्पक्ष होना चाहिए न की पक्षपाती.
- **पहल :** एक अच्छा नेतृत्वकर्ता अवसरों के लिए प्रतीक्षा नही करता है बल्कि अपने अनुसार अवसर उत्पन्न करता है और संगठन के लाभ के लिए उनका उपयोग करने के लिए पहल करता है.
- **संचार कौशल :** एक नेतृत्वकर्ता को एक अच्छा संचालक होना चाहिए ताकि वह अपने विचारों, नीतियों और प्रक्रियाओं को स्पष्ट रूप से लोगों को समझा सके. आमतौर पर अच्छा वक्ता होने से पूर्व व्यक्ति को एक अच्छा श्रोता और काउंसलर होना चाहिए .
- **प्रेरणा कौशल :** एक नेतृत्वकर्ता को एक प्रभावी प्रेरक होना चाहिए जो लोगों की आवश्यकताओं को समझ कर उनकी जरूरतों को संतुष्ट कर उन्हें प्रेरित करे.
- **आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति :** एक नेतृत्वकर्ता को उच्च स्तर का आत्मविश्वास और अपार इच्छाशक्ति से परिपूर्ण होना चाहिए अन्यथा कर्मचारी उस पर विश्वास नहीं करेंगे.
- **गोपनीय :** एक नेतृत्वकर्ता को पेशेवरों और विपक्ष का विश्लेषण करने और तदनुसार निर्णय लेने के लिए पर्याप्त सतर्क होने की जरूरत होती है. उसे दूरदर्शिता भी होनी आवश्यक है ताकि वह अपने द्वारा लिए गए फैसलों के भविष्य के प्रभाव का अंदाजा लगा सके.
- **निर्णायक :** एक नेतृत्वकर्ता को अपने काम के प्रबंधन में निर्णायक होना चाहिए और उसके द्वारा लिए गए निर्णयों पर दृढ़ होना चाहिए.
- **सामाजिक कौशल :** एक नेतृत्वकर्ता को दूसरों के प्रति सहानुभूति का भाव रखना चाहिए. उसे एक मानवतावादी भी होना चाहिए तथा दायित्वबोध के साथ दूसरों की मदद करने में प्राथमिक व्यवहार करना चाहिए.

महिला सशक्तिकरण

- रक्षा रानी
सहायक प्रबंधक
शाखा : दरभंगा

''कब तक तारीख में जानी ही नहीं,
तुझ में शोले भी हैं, बस अश्क, फिसानी हीं नहीं
तू हकीकत भी है, दिलचस्प कहानी ही नहीं
अपनी तारीख का उनवान बदलना है तुझे,
उठ मेरी जान मेरे साथ हीं चलना है तुझे''

- कैफी साहब

हमारे देश में आरंभ से ही महिलाओं को सम्मानजनक पद प्राप्त है। भारत एक देश है, जहां यह मान्यता चली आ रही है कि जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता वास करते हैं। इतिहास की ओर से देखा जाए तो आरंभ में अर्थात सिंधु सभ्यता और वैदिक सभ्यता में, महिलाओं की स्थितिउत्कृष्ट थी। परंतु धीरे-धीरे उनकी स्थिति बिगड़ती चली गई। अंग्रेजी शासन के दौरान और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, हमारे देश के महान समाज सुधारको ने महिलाओं को पुन: सम्मानित स्थिति प्राप्त कराने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए और बहुत हद तक वह इसमें सफल भी रहे। परंतु, आज भी महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। अक्सर भारत में महिलाओं के साथ बढ़ते अपराधों की चर्चा होती रहती है। आज भी देश की आधी आबादी की एक बहुत बड़ी जनसंख्या अशिक्षित है। जिस कारण से वह अपने अधिकारों को भी नहीं समझ पाती है और अपनी क्षमताओं का सदुपयोग नहीं कर पाती है। इसलिए, हमारे देश और समाज को महिला सशक्तिकरण हेतु प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है कि महिलाओं को वह क्षमता प्रदान करना कि वह अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय ले सके। महिला सशक्तिकरण की सोंच न केवल महिलाओं की ताकत और कौशल को उसके दुखदाई स्थिति से ऊपर उठाने पर केंद्रित करती हैं, बल्कि यह पुरुषों को महिलाओं के संबंध में शिक्षित करने और महिलाओं के प्रति बराबरी के साथ सम्मान और कर्तव्य की भावना पैदा करती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, महिलाओं को सामाजिक और विकासशील धाराओं से जोड़ने के लिए अनेक प्रयास किए गए और कई नीतियां बनाई गई। लिंग समानता का सिद्धांत भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और नीति निर्देशक सिद्धांतों में प्रतिपादित हैं। संविधान महिलाओं को न केवल समानता का दर्जा प्रदान करता है, अपितु महिलाओं के पक्ष में भेद-भाव मिटाने के सकारात्मक उपाय करने की शक्ति प्रदान करता है।

महिला सशक्तिकरण का मुख्य लाभ समाज से जुड़ा हुआ है। अगर समाज में महिलाएं शिक्षित होंगी, तो वे परिवार को भी शिक्षित बना सकती हैं, जिससे हमारे देश को पढ़े-लिखे नौजवान मिलेंगे जो कि देश की तरक्की में अपना योगदान दे सकेंगे। सशक्त महिला घरेलू हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत रख सकती है, जिससे वे घरेलू हिंसा में न केवल कमी लायेंगी, बल्कि संबंधित व्यक्ति को सजा दिलवाने में भी सफल होंगी।

महिला सशक्तिकरण का महत्व गरीबी कम करने में भी है। कभी-कभी परिवार के पुरुषों के द्वारा अर्जित धन परिवार की मांगों को पूरा करने हेतु पर्याप्त नहीं होता है। इसलिए, गरीबी कम करने के लिए महिलाओं का शिक्षित होने के साथ-साथ कामकाजी होना भी जरूरी है। हमारे समाज में अधिकाँश महिलाऐं अपने अंदर की प्रतिभाओं का सम्पूर्ण इस्तेमाल नहीं कर पाती हैं। अगर महिलाऐं का सही से सशक्तिकरण कर दिया जाए, तो महिला अपने हुनर की पहचान कर सकेगी, जिससे देश को प्रतिभाशाली महिलायें मिलेंगी जो देश के विकास के लिए कार्य कर सकेंगी और अपना योगदान दे सकेंगी।

महिला सशक्तिकरण करने का जो सबसे बड़ा लक्ष्य हैं, वो महिलाओं को पुरुषों के समान समाज में बराबरी का दर्जा देना है। अभी भी दुनियाँ में कई ऐसे देश हैं, जहां पर महिला को पुरुषों की तरह अधिकार नहीं दिए गए हैं। वहाँ महिलाएं अभी भी केवल गुलामों की तरह कार्य करती हैं, उनको न अपनी बात कहने की और न कुछ निर्णय लेने की आजादी दी गयी है।

वहीं महिला सशक्तिकरण के जरिये ऐसी महिलाओं का विकास करने पर हीं जोर दिया जाता है, ताकि वे कम से कम बोलने के लिए आजाद हों और अपनी बात सभी के सम्मुख निर्भीक हो कर रख सकें। महिला सशक्तिकरण से देश की लगभग आधी आवादी का चहुमुखी विकास होगा और जहां तक संभव है, महिला सशक्त होने से परिवार, समाज और देश का भला हीं होगा, किसी का कोई भी नुकसान तो बिलकुल नहीं होगा।

संस्मरण : मेहनत का फल

- निधि चौकसे,
वरिष्ठ प्रबन्धक- आई .टी.
आर सी सी दिल्ली - सेन्ट्रल

हमारा जीवन रोज़ नए अनुभव कराता है। कभी-2 जीवन मे घटी सामान्य घटना व्यक्ति की जीवन शैली बदल देती है। जीवन की कठिन राहों मे कुछ संस्मरण ऐसे होते है, जिनकी यादे जहाँ मन को शीतलता प्रदान करती हैं, वही साथ-2 हमें प्रेरणा एवं उत्साह से भर देती हैं। मेरा यह संस्मरण कुछ इसी प्रकार का है।

बात आज से 8-10 साल पुरानी है, मेरे पिताजी बैंक मे कर्मचारी थे, उनका तबादला बेतुल जिले की एक छोटी सी शाखा गंजवासोदा मे होगया। अपने कठिन परिश्रम से उन्होने शाखा के कारोबार को बढ़ाया एवं नए ग्राहको को बैंक से जोड़ा। वे जरूरतमंदो की मदद करते एवं उन्हे सही सलाह देते थे।

उनकी शाखा के बाहर एक छोटी सी मोची की दुकान थी, जिसमे 15-16 साल का बालक बेठता था और लोगो के जूते चप्पलो की मरम्मत करता था। भोजनावकाश मे सभी कर्मचारी चाय नाश्ता करने बैंक के बाहर लगी दुकान जाते थे, साथ ही मेरे पिताजी रोज़ उस बालक से जूते पोलिश करवाते थे। पिताजी के पूछने पर उस बालक ने अपनी व्यथा सुनाई- ''बाबूजी मेरा नाम राम (छोटू) है, मेरे बाबा का आकस्मिक निधन से परिवार की ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर आ गयी इस कारण मुझे अपनी पढ़ाई भी बीच मे छोडनी पड़ी। घर मे माँ और 2 छोटी बहने है, माँ आस पास के घरो मे काम करती है और बहनो को संभालती है। दिनभर मे 50-75 रु. कमा लेता हूँ उसी मे परिवार का गुजारा होता है।'' मेरे पिताजी ने राम को अपनी पढ़ाई पूरी करने की सलाह दी और राम ने स्वाध्यायी छात्र के रूप मे अपने पढ़ाई शुरू करदी। समय-2 पर पिताजी राम की वित्तीय सहायता भी करते थे।

समय गुज़रता गया और राम ने अपनी 12वी की परीक्षा अच्छे अंको से पास कर ली। मेरे पिता जी राम की कर्तव्यनिष्ठा, लगन, ईमानदारी और मेहनत से बहुत प्रसन्न थे और उन्होने राम को अपनी शाखा मे दैनिक वेतन पर रख लिया। राम रोज़ ब्रांच की साफ सफाई के साथ चाय भी बनाता था। रोज़ के राम 150-200 रु. तक कमा लेता था। खाली समय मे राम शाखा के कामो मे रुचि लेने लगा। जल्द ही राम ने ब्रांच के सभी कामो की जानकारी ले ली एवं ग्राहको की भी मदद करने लगा। खाता खुलवाने से लेकर ऋण लेने तक की सभी जानकारी वो ग्राहको को देता। शाखा मे सभी कर्मचारी राम की सराहना करने लगे। साथ ही राम ने स्नातक की परीक्षा मे प्रवेश भी ले लिया और शाम को अपनी पढ़ाई करने लगा। सभी कर्मचारी राम को पढ़ाई मे भी मदद करने लगे।

समय अपनी गति से चलता रहा और राम ने स्नातक की परीक्षा भी अच्छे अंको से पास कर ली। अब राम अपने बाबा के सपनों को पूरा करना चाहता था, जो था की राम अपनी जूतो की दुकान को आगे बढ़ाए। राम के आग्रह पर बैंक ने उसे ऋण दे कर वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई। राम की मेहनत रंग लाई और उसने अपनी खुद की दुकान खरीद ली। किसी ने सही ही कहा है,

''लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती,
कुछ किए बिना जय जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती''

इसी दौरान मेरे पिताजी की पदोन्नति हो गयी और वे वहा से चले गए। समय परिवर्तनशील है, कुछ सालो बाद पिताजी भी सेवानिवृत होकर भोपाल मे बस गए।

मै अपने परिवार सहित गर्मी की छुट्टियों मे भोपाल आई हुई थी। कुछ काम से पिताजी के साथ मै भी पैदल पास के बाज़ार मै गयी हुई थी, वापस आते समय अचानक एक बड़ी गाड़ी हमारे आगे रुकी और उसमे से 28-29 साल का एक नवयुवक उतारा और पिताजी को प्रणाम करते हुये चरण स्पर्श किए। हम दोनों स्दब्ध रह गए। तभी वह बोला ''बाबूजी मै आपका राम (छोटू) हूँ, पहचाना नहीं आपने'' पिताजी तुरंत पहचान गए और बोले ''अरे राम तुम कैसे हो, जीते रहो राम हमेशा खुश रहो। घर पर सब लोग कैसे है, तुम्हारा काम कैसा चल रहा है, अचानक तुम यहा कैसे ? तब राम बोला बाबूजी आपके आशीर्वाद से सब ठीक है। दोनों बहनो की शादी भी सम्पन्न घरो मै हो गई और अपनी माँ एवं पत्नी के साथ इसी शहर मे रहने लगा हूँ। मेरी जूतो की दुकान अब कई शहरो मै खुल चुकी है साथ ही अगले महीने एक बड़ा शू मॉल भी भोपाल मै खोलने जा रहा हूँ। सब आपकी कृपा है।

पिताजी ने राम को बहुत बधाई दी एवं घर ले आए चाय पीते पीते राम ने बताया की अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए राम ने अपने बैंक से ही ऋण लिया है। राम ने दोनों हाथ जोड़ लिए और कहा -''बाबूजी मै आज जो भी हूँ आपकी वजह से हूँ। आप अगर उस बालक पर विश्वास ना करते तो मै आज उसी कस्बे मे रह गया होता। आपका सही मार्गदर्शन सही समय पर नहीं मिला होता तो मै आज इस मुकाम तक नहीं पहुँच सका होता''। इतना कहते-2 राम की आंखे भर आई।

पिताजी बोले ''राम मैंने तो वही किया जो मुझे ठीक लगा। जरूरतमंदो की मदद करने मै मुझे खुशी मिलती है। बेटा तुम कामयाब अपनी मैहनत और आत्मविश्वास की वजह से हो। मैंने और मेरे बैंक ने जो किया वो हमारा सामाजिक दायित्व था। आज तुमने मुझे गौरवान्वित कर दिया है। मै तुम्हारी सफलता से बहुत खुश हूँ। मै भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ की तुम सदा खुश रहो और खूब तरक्की करो।''

राम तुम सदा मेरी सीख याद रखना, हमेशा जरूरतमंदो की मदद करना, कभी भी अहंकार मत करना। हमेशा अपनी जड़ो को जमीन से जोड़े रखना। और हमेशा याद रखना-

''वह जीवन क्या जो, जीवन मे कुछ काम किसी के आ ना सका,
वह हृदय नहीं एक पत्थर है, जो दुनिया को अपना ना सका ।
वह मानव क्या जो अपना ही, जो पेट पालना जान सका,
जो मानव होकर मानव कि, पीड़ा को ना कभी पहचान सका।
जो केवल अपने हेतु जीया, उसका तो जीवन व्यर्थ रहा,
यदि मानव मे मानवता ना हो, तो मानव का क्या अर्थ रहा।''

तब राम ने कहा ''बाबूजी मै सदा अपने जीवन मै आपके दिखाये हुये आदर्शो पर चलने की कोशिश करुगा''। राम ने हम सब से जाने की अनुमति मागी और सपरिवार फिर आने का वादा भी किया। हम लोग उस छोटे बालक के जीवन से बहुत प्रभावित हुये और यही सोचने लगे की सार्थक प्रयास कभी असफल नहीं होते, वे सफलता की ओर ले जाते है।

''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''

सबरीमला

- **जॉर्ज के टी**, प्रबंधक
क्षे. का., तिरुवनन्तपुरम

सबरीमला, केरल के पेरियार टाइगर अभयारण्य में स्थित एक प्रसिद्ध हिन्दू मन्दिर है। यहाँ विश्व का सबसे बड़ा वार्षिक तीर्थयात्रा होती है जिसमें प्रति वर्ष लगभग 2 करोड़ लोग श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं।

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम से 175 किमी की दूरी पर पंपा है और वहाँ से चार-पांच किमी की दूरी पर पश्चिम घाट से सह्यपर्वत शृंखलाओं के घने वनों के बीच, समुद्रतल से लगभग 1000 मीटर की ऊंचाई पर शबरीमला मंदिर स्थित है।

सबरीमला शैव और वैष्णवों के बीच की अद्भुत कड़ी है। मलयालम में 'शबरीमला' का अर्थ होता है, पर्वत। वास्तव में यह स्थान सह्याद्रि पर्वतमाला से घिरे हुए पथनाथिटा जिले में स्थित है। पंपा से सबरीमला तक पैदल यात्रा करनी पड़ती है। यह रास्ता पांच किलोमीटर लम्बा है।

सबरीमला में भगवान अयप्पन का मंदिर है। शबरी पर्वत पर घने वन हैं। इस मंदिर में आने के पहले भक्तों को 41 दिनों का कठिन व्रत का अनुष्ठान करना पड़ता है जिसे 41 दिन का 'मण्डलम्' कहते हैं। यहाँ वर्ष में तीन बार जाया जा सकता है- विषु (अप्रैल के मध्य में), मण्डलपूजा (मार्गशीर्ष में) और मलरविलक्कु (मकर संक्रांति में)।

कम्बक रामायण, महाभागवत के अष्टम स्कंध और स्कन्दपुराण के असुर काण्ड में जिस शिशु शास्ता का उल्लेख है, अयप्पन उसी के अवतार माने जाते हैं। कहते हैं, शास्ता का जन्म मोहिनी वेषधारी विष्णु और शिव के समागम से हुआ था। उन्हीं अयप्पन का मशहूर मंदिर पूणकवन के नाम से विख्यात 18 पहाडियों के बीच स्थित इस धाम में है, जिसे सबरीमला श्रीधर्मषष्ठ मंदिर कहा जाता है। यह भी माना जाता है कि परशुराम ने अयप्पन पूजा के लिए सबरीमला में मूर्ति स्थापित की थी। कुछ लोग इसे रामभक्त शबरी के नाम से जोड़कर भी देखते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि करीब 700-800 साल पहले दक्षिण में शैव और वैष्णवों के बीच वैमनस्य काफी बढ़ गया था। तब उन मतभेदों को दूर करने के लिए श्री अयप्पन की परिकल्पना की गई। दोनों के समन्वय के लिए इस धर्मतीर्थ को विकसित किया गया। आज भी यह मंदिर समन्वय और सद्भाव का प्रतीक माना जाता है। यहां किसी भी जाति-बिरादरी का और किसी भी धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति आ सकता है।

पंपा पहुंचकर पैदल ही सबरीमला तक की यात्रा किया जाता है। यह मार्ग दुर्गम है, पर प्रकृति के बीच होने का अहसास ऐसी कठिनाई उठाने के लिए मन को तैयार कर देता है। मकर संक्रांति और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के संयोग के दिन, पंचमी तिथि और वृश्चिक लग्न के संयोग के समय ही श्री अयप्पन का जन्म माना जाता है। इसीलिए मकर संक्रांति के दिन भी धर्मषष्ठ मंदिर में उत्सव मनाया जाता है। अधिक तीर्थयात्री मकर संक्रांति के दिन ही वहां पहुंचते है।

मंदिर स्थापत्य के नियमों के अनुसार से तो खूबसूरत है ही, यहां एक आंतरिक शांति का अनुभव भी होता है। जिस तरह यह 18 पहाडियों के बीच स्थित है, उसी तरह मंदिर के प्रांगण में पहुंचने के लिए भी 18 सीढियां पार करनी पड़ती हैं। मंदिर में अयप्पन के अलावा मालिकापुरत्त अम्मा, गणेश और नागराजा जैसे उपदेवताओं की भी मूर्तियां हैं

उत्सव के दौरान अयप्पन का घी से अभिषेक किया जाता है। मंत्रों का जोर-जोर से उच्चारण होता है। परिसर के एक कोने में सजे-धजे हाथी खड़े होते हैं। पूजा-अर्चना के बाद सबको चावल, गुड़ और घी से बना प्रसाद 'अरावणा' बांटा जाता है ।

मकर संक्रांति के अलावा नवंबर की 17 तिथि को भी यहां बड़ा उत्सव मनाया जाता है। मलयालम महीनों के पहले पांच दिन भी मंदिर के कपाट खोले जाते हैं। इनके अलावा पूरे साल मंदिर के दरवाजे आम दर्शनार्थियों के लिए बंद रहते हैं।

यहां ज्यादातर पुरुष भक्त देखें जाते हैं। महिला श्रद्धालु बहुत कम होती हैं। अगर होतीं भी हैं तो बूढ़ी औरतें और छोटी कन्याएँ। इसका कारण यह है की श्री अयप्पन ब्रह्माचारी थे। इसलिए यहां पे छोटी कन्याएँ आ सकती हैं, जो रजस्वलान हुई हों या बूढ़ी औरतें, जो इससे मुक्त हो चुकी हैं। जाति-धर्म का बंधन न मानने के बाद भी यह बंधन श्रद्धालुओं को मानना होता है। बाकी, धर्म निरपेक्षता का अद्भुत उदाहरण यहाँ देखने को मिलता है कि यहां से कुछ ही दूरी पर एरुमेलि नामक जगह पर श्री अयप्पन के सहयोगी माने जाने वाले मुसलिम धर्मानुयायी वावर का मकबरा भी है, जहां मत्था टेके बिना यहां की यात्रा पूरी नहीं मानी जाती।

दो मतों के समन्वय के अलावा धार्मिक सहिष्णुता का एक निराला ही रूप यहां देखने को मिलता है। धर्म इंसान को व्यापक नजरिया देता

है, इसकी भी पुष्टि हुई। व्यापक इस लिहाज से कि अगर मन में सच्ची आस्था हो, तो भक्त और ईश्वर का भेद मिट जाता है।

यह भी कहा जाता है कि अगर कोई व्यक्ति तुलसी या रुद्राक्ष की माला पहनकर, व्रतरखकर, सिर पर नैवेद्य से भरी पोटली (इरामुडी) लेकर यहां पहुंचे, तो उसकी मनोकामना जरूर पूरी होती है। मालाधारण करने पर भक्त स्वामी कहलाने लगता है और तब ईश्वर और भक्त के बीच कोई भेद नहीं रहता। वैसे श्री धर्मषष्ठ मंदिर में लोग जत्थों में आते हैं। जो व्यक्ति जत्थे का नेतृत्व करता है, उसके हाथों में इरामुडी रहती है। पहले पैदल मीलों यात्रा करने वाले लोग अपने साथ खाने-पीने की वस्तुएं भी पोटलियों में लेकर चलते थे। तीर्थाटनका यही प्रचलन था। अब ऐसा नहीं है पर भक्ति भाव वही है। उसी भक्ति भाव के साथ यहां करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। कुछ वर्ष पहले नवंबर से जनवरी के बीच यहां आने वाले लोगों की संख्या पांच करोड़ के करीब आंकी गई। यहां की व्यवस्था देखने वाले ट्रावनकोर देवासवम बोर्ड के अनुसार, इस अवधि में तीर्थस्थल ने केरल की अर्थव्यवस्था को 10 हजार करोड़ रुपये प्रदान किए हैं।

बोर्ड श्रद्धालुओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी लेता है। वह तीर्थयात्रियों का नि:शुल्क दुर्घटना बीमा करता है। इस योजना के अंदर चोट लगने या मृत्यु होने पर श्रद्धालु या उसके परिजनों को एक लाख रुपये तक दिए जाते हैं। इसके अलावा बोर्ड के या सरकारी कर्मचारियों के साथ अगर कोई हादसा होता है, तो उन्हें बोर्ड उन्हें डेढ़ लाख रुपये तक देता है।

उत्तर दिशा से आनेवाले यात्री एरणाकुलम से होकर कोट्टयम या चेंगन्नूर रेलवे स्टेशन से उतरकर वहां से क्रमश: 116 किमी और 93 किमी तक किसी न किसी साधन से पंपा पहुंच सकते है। पंपा से पैदल चार-पांच किमी वन मार्ग से पहाड़ियां चढकर ही शबरिमला मंदिर में अय्यप्प के दर्शन का लाभ उठाया जा सकता है।

तिरुअनंतपुरम सबरीमला का सबसे समीपी हवाई अड्डा है, जो यहां से 92 किलोमीटर दूर है। वैसे तिरुअनंतपुरम, कोच्चि या कोट्टायम तक रेल मार्ग से भी पहुंचा जा सकता है। सबरीमला का सबसे समीपी रेलवे स्टेशन चेंगन्नूर है। ये सभी नगर देश के दूसरे बडे नगरों से जुडे हुए हैं।

त्रास

धैर्य और पीड़ा के अंतर्द्वंद में,
बैठा था अम्बर के नीचे
किंकर्तव्यविमूढ़ सा बैठा था,
उवासी लेते आँखों को मीचे
मंद वयार का झोंका आया,
कानों में कह गया 'अनिल'
अन्त:पुर में ताक-झांककर,
'विश्व' से कुछ करो 'अपील'

ईश्वर ने यह सृष्टि बनाया,
जीव-जन्तु और तरु बसाया
प्रकृति संवारने फिर मनुज ने,
'विवेकशील' का महा वर पाया
लोभ अहं से ओतप्रोत जीवन में काम क्रोध
और मोह बसाया
विवेक से गतिमान हुए हम,
वेदों का संज्ञान लिए हम
प्रगति के पथ पर चलते चलते कहाँ से चले
थे, कहाँ आ गये हम?

विकास के अहंकारी रथ पर,
पार कर गये हम सारे हद को
कब सदाचार कदाचार में बदला भूल गये
उस दिव्य शब्द को
भूल गया आहार श्रृंखला,
तोड़ दिया आहार जद को
विलुप्तप्राय जीवों की आह से,
करोना से कुछ सिख लिए हम
प्रगति के पथ पर चलते चलते कहाँ से चले
थे, कहाँ आ गये हम?

'जियो और जीने दो' के मंत्र को त्यजकर,
जिजिविषा उसकी हर डाली
कहाँ संरक्षण का दायित्व था हमपर,
कहाँ उसकी हत्या कर डाली?
क्यों मनुज होने का दंभ भरते-भरते,
विकसित होने की स्वांग रचाली?
जिस प्रकृति के गोद में खेलकूद कर,
बढ़ते गये विकास के पथ पर हम
प्रगति के पथ पर चलते चलते कहाँ से चले
थे, कहाँ आ गये हम?

अतिकृत कर्म और स्वार्थ भावना,
व्यसनलीन और विषय-वासना
दुर्बुधि और दंभ जनित इस तम के कारण
भूल गये प्रकृति उपासना
कहाँ-कहाँ प्रकृति की हत्या कर डाली,
पर्यावरण की घुटती अंतर्वेदना
अब कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि और
कहीं हिमवृष्टि से है जीवन बेदम
प्रगति के पथ पर चलते चलते कहाँ से चले
थे, कहाँ आ गये हम?

जीवन क्या और सुख-दु:ख क्या?,
सब समय की आँख मिचोली है,
ग्रीष्म, शरद के बाद ही आती,
ऋतुराज बसंत - रंगोली है
सुकृत्य करो जबतक हो धरणी पर,
मानवता भी कृतार्थ हो
महाभारत के इस कुरुक्षेत्र में तुम्ही केशव
और तुम्ही पार्थ हो
नवजीवन शैली अपनाकर संयम से जग में
अधिवास करें हम
ताकि पश्चाताप ना हो - कहाँ से चले थे,
कहाँ आ गये हम?

- किशोर कुमार दास
क्षेत्रीय कंप्यूटर केन्द्र
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

ग़ज़ल

क्या तेरा जोश कोई इंक़लाब लाएगा,
या यूँ ही टूट के सपनों सा बिखर जाएगा।

है बहुत मुश्किल तूफान से लड़ना लेकिन,
हो अगर दम तो तू पार निकल जायेगा।।

अपने जज़्बात को रख क़ाबू में लड़ना है अगर,
क्या पता कौन से मंझधार में काम आएगा।

तू तो कहता था तेरे साथ हूँ साये की तरह,
पर शाम होते ही तू मुझ से बिछड़ जाएगा।।

मेरे हर लफ्ज़ तुझे माज़ी में ले जाएंगे,
तू चाह के भी मुझे भूल नही पायेगा।

तू संगदिल ही सही, है तो मोहब्बत अपनी,
बस यही आस मुझे पास तेरे लाएगा।।

क्या तेरा जोश कोई इंक़लाब लाएगा,
या यूँ ही टूट के सपनों सा बिखर जाएगा।

ग़ज़ल

मेरे क़दमों पे रहा था वक़्त का सर देर तक
देखने वालों ने देखा था ये मंज़र देर तक।

एक दो लम्हे खुशी के मिल गए, तो मिल गए
कौन हंसता मुस्कराता है यहां पे देर तक।।

देख लेना वो पिघल जाएगा एक दिन मोम सा
कोई पत्थर रह नहीं सकता है पत्थर देर तक।

उसने जब बादीद-ए-नम* है खुदा हाफिज़ कहा
सिसकियां सुनता रहा मैं जाने कितनी देर तक।।

रात की कोमल स्याही धीरे-धीरे धुल गई
और मैं तक़ता रहा यूँ हाथ थामे देर तक।

मेरे क़दमों पे रहा था वक़्त का सर देर तक
देखने वालों ने देखा था ये मंज़र देर तक।।

- मोहम्मद शाहिद खान
प्रबंधक (सूचना तकनीक)
क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

पहचान से मिला काम थोडे बहुत समय के लिए रहता हैं लेकिन काम से मिली पहचान उम्रभर रहती हैं।

ढूंढ रहा हूँ बचपन

रह गई है यादें किस्सों में,
उम्र हो चली पचपन,
मिट्टी की सौंधी खुशबू में,
फिर भी मैं ढूंढ रहा बचपन !

नुक्कड़ से लेकर मैदानों तक,
पग-पग सूने हो चले,
वीरान पड़े इन गलियारों में,
ढूंढ रहा हूं मैं बचपन !

बड़ी-बड़ी इन ख्वाहिशों में,
सिमट रही जिंदगी मेरी,
मासूम बरगद की बालियों में,
फिर भी मैं ढूंढ रहा बचपन !

सूना सूना सा मोहल्ला,
जहां अपने भी अनजान लगे,
फिर भी रामू की टपरी पर,
ढूंढ रहा हूं मैं बचपन !

ननिहालों पर आमद खो गई,
गुम गई कंचो की डलिया,
फिर भी नीरस खलियानों में,
ढूंढ रहा मैं बचपन !

सीटी, बत्ती, लट्टू, गिल्ली,
न जाने किस ओर चले गए,
खाली अंगड़ाईयों की ओटो पे,
ढूंढ रहा हूं मैं बचपन !

बारिश, जाड़ा या पतझड़ हो,
मौसम सब मेहमान लगें,
ढलती उम्र की सोहबतों में,
ढूंढ रहा हूं मैं बचपन !

कच्ची कैरी आम हो गई,
जिंदगी, शायद मेरी मुकाम हो गई,
फिर भी रोशन आंगन मेरा,
क्योंकि.... क्योंकि ढूंढ रहा मैं
बचपन!

- राहुल जैन,
सहायक प्रबंधक,
आंचलिक कार्यालय भोपाल

कभी यूं भी तो हो

कभी यूं भी तो हो,
कभी यूं भी तो हो,
दरियां का शाहिल हो,
पूरे चांद की रात हो,
और तुम आओ।
कभी यूं भी तो हो,

परियों की महफिल हो,
कोई तुम्हारी बात हो,
और तुम आओ।
कभी यूं भी तो हो,

ये नरम मुलायम ठंडी हवाए ,
जब तुम्हारे घर से गुजरे,
तुम्हारी खुशबू चुराएं
मेरे घर ले आए।
कभी यूं भी तो हो,

सुनी हर महफिल हो,
कोई न मेरे साथ हो,
और तुम आओ।
कभी यूं भी तो हो,

ये बादल ऐसा टूट के बरसे,
मेरे दिल की तरह तुम्हारा दिल भी
तरसे,
तुम निकलो घर से,
कभी यूं भी तो हो,

तन्हाई हो, दिल हो,
बूंदे हो, बरसात हो,
और तुम आओ।
कभी यूं भी तो हो,

- सुमित किशोर,
मुख्य प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय बांकुड़ा

नवीनतम तकनीक एवं बैंकिंग

- अमित कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
(आई.टी) क्षे.का. झाँसी

बैंकिंग एक वृहद क्षेत्र व्यवसायिक क्षेत्र है, जिसमें समय के साथ निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं. समय की मांग के साथ ग्राहकों की आवशयकताओं के अनुरूप बैंकिंग क्रियाकलापों में नवीन तकनीक का समावेश होता रहता है. बैंकों का मुख्य व्यवसाय ग्राहकों से जमा प्राप्त करना और जरूरतमंद ग्राहकों को ऋण प्रदान करना है. बीसवीं सदी तक ग्राहकों को अपनी प्रत्येक बैंकिंग आवश्यकताओं के लिए बैंकों में जाना पड़ता था. कम्प्यूटरीकरण के परिणामस्वरूप ग्राहकों को बैंक परिसर केवल विशिष्ट परिस्थितियों में ही जाना पड़ता है. एटीम से 24 घंटे नकदी की निकासी की जा सकती है और कुछ शाखाओं ने परिसर की बाहर कैश जमा मशीनें भी स्थापित की हैं. अब हम लगभग 75% बैंकिंग कार्य केवल घर में रहकर कर सकते हैं. इस प्रकार कर्मचारियों पर दैनिक कार्यभार का दबाव कम हो जाता है. यह लाभ हमें तभी मिल सकते हैं जब बैंकिंग की नवीनतम तकनीक को अपनायें. बैंक द्वारा अपनाई जाने वाली प्रमुख नवीनतम तकनीकें निम्न प्रकार हैं:-

सी.बी.एस. प्रणाली : सभी बैंकों ने आज एकीकृत बैंकिंग प्रणाली को अपना लिया है जिसके कारण ग्राहकों को मिलने वाली सेवाओं में कायाकल्प हो गया है. बैंक कर्मचारियों को बडे-बडे रजिस्टरों से मुक्ति मिली है और बैंकिंग का परिदृश्य बदलने से ग्राहक सेवाओं में लगातार वृद्धि हो रही है. वर्तमान समय में ग्राहकों की अपेक्षाएं बढ़ी है कि उन्हें समस्त बैंकिग सुविधाएं घर पर ही मिल जाएं.

इंटरनेट बैंकिंग : बैंकिंग जगत में सबसे महत्वपूर्ण तकनीक इंटरनेट बैंकिंग है. इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से आरटीजीएस/नेफ्ट, खाते खोलना, बंद करना, सावधि जमा रसीदें, आवर्ती खाते खोलना, स्थाई अनुदेश जारी करना, क्रेडिट और डेबिट कार्ड को बंद करना, इ-कामर्स लेन-देन की सीमा निर्धारित करना, चेक बुक के लिए आवेदन करना, चेक का भुगतान रोकना, पीएमएनआर एफ को दान देना एवं सभी प्रकार की विवरणी प्राप्त करना शामिल है.

ए.टी.एम : स्वचलित टेलर मशीन का प्रयोग ग्राहक के खाते से गुप्त पिन कोड़ आधारित नकदी की निकासी की जाती है. इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि 24 घंटे इस सुविधा का लाभ ग्राहकों को मिलता है. एटीएम मशीन का सबसे पहले 1967 में लंदन में बर्क्लाज बैंक द्वारा किया गया. एटीएम सुविधा के जनक सर सेफर्ड ब्रॉन है. अपने देश में सबसे पहले एटीम सुविधा एचएसबीसी बैंक द्वारा 1987 में मुम्बई में शुरू की गई. सभी बैंकों में एटीएम सुविधा का बढावा दिया जा रहा है जिससे ग्राहक सेवा निरंतर सुदृढ़ हो रही है.

सी.बी.एस.: कोर बैंकिंग समाधान को बैंकों में लागू करने के लिए 1984 में रंगराजन कमेटी द्वारा सिफारिस की गई. इस सिफारिस को सभी बैंकों ने क्रमश: अपनाया. सीबीएस प्रणाली के माध्यम से सभी शाखाएं एक दूसरे से जुड़ गईं और रियल टाइम पर हम किसी भी ग्राहक के खाते में पैसा जमा कर सकते हैं और निकाल सकते हैं. इसके अतिरिक्त बहुत सी सेवाएं जैसे मोबाइल बैंकिंग, एस.एम.एस बैंकिंग, टेलीकालर बैंकिंग, एइपीएस, यू.पी.आई वीपीए, यू.एस.बी. आधारित बैंकिंग सुविधाएं ग्राहकों के लिए हर समय मौजूद हैं.

मोबाइल बैंकिंग : विगत 4-5 वर्षों में मोबाइल बैंकिंग ने ग्राहकों को पर्याप्त बैंकिंग सुविधाएं एक ही प्लेटफार्म में दे दी है. एनरॉएड आधारित मोबाइल फोन के बाजार में आने से सामान्य लोगों की जेब में बैंकिंग सुविधाएं आ गई है. हमारे बैंक के सेंट मोबाइल एप को देश के सर्वोत्तम मोबाइल एप का एवार्ड मिला है. मोबाइल बैंकिंग के द्वारा हम बहुत से कार्य कर सकते हैं. इसके माध्यम से किसी भी वैल्यू एडेड सेवाओं का भुगतान एक क्षण में कर सकते हैं- बिजली बिल, पानी का बिल, टेलीफोन का बिल, डीटीएच चार्ज, मोबाइल चार्ज, स्कूल शुल्क का भुगतान, पी.पी.एफ. भुगतान, एन.पी.एस खातों में भुगतान आदि शामिल हैं. मोबाइल बैंकिंग के द्वारा हम भारत बिल पेमेंट सिस्टम, क्यू.आर. भुगतान और यू.पी.जे. - यूपीए भुगतान भी कर सकते हैं.

एस.एम.एस. बैंकिंग : एस.एम.एस बैंकिंग एक तरह का अपने खाते के प्रति एक सचेतक प्रणाली है, जिसके माध्यम से हमें पता चलता है कि कि हमारे खाते में कितना रुपया जमा किया गया. इसके साथ ही किस तरह की भुगतान प्रणाली का उपयोग किया गया. पहले यह सेवा मुफ्त थी, लेकिन बैंक इसका भी प्रभार लेते हैं. इसकी सूचना के आधार पर हम अपने एटीएम कार्ड को बंद भी कर सकते हैं.

टेलीकालर बैंकिंग : इसके माध्यम से हम एक बैंक के नम्बर पर कॉल करते हैं और कॉल रिसीव होने पर हम अपनी बैंकिंग आवश्यकता बताते हैं. तदुपरांत टेली कालर अपना आटोमेशन सिस्टम कार्य करता है या बैंक का कोई कर्मी या दोनो आपसे कुछ प्रश्न पूछेंगे और आपको उत्तर देना होगा, इसके बाद आपकी समस्या का समाधान हो जाएगा.

टॉल फ्री नम्बर बैंकिंग : टॉल फ्री नम्बर बैंकिंग आज के दौर की एक बहुत ही अच्छी बैंकिंग सेवा है. इसका उपयोग सभी ग्राहक कर सकते हैं. इसका आधारभूत प्रयोग एटीएम कार्ड खो जाने, चोरी हो जाने, खराब हो जाने के कारण एवं ग्राहक के खाते से अचानक पैसा निकल जाने की स्थिति में होता है. इसके माध्यम से हम अपने एटीएम कार्ड और खाते को ब्लाक कर सकते हैं जिससे कोई भी धोखा-धड़ी न हो सके. इस टॉल फ्री नम्बर पर कॉल करने के बाद हमें कुछ प्रश्नों का जवाब देना पड़ता है और फिर हमारा काम आसान हो जाता है.

क्यू.आर. कोड - त्वरित प्रतिक्रिया कोड- आजकल समान खरीदने पर भुगतान के लिए आन-लाइन तरीके का प्रयोग बहुतायत से होता है. जिसमें क्यू आर कोड का प्रचलन बहुत ज्यादा है. क्यू आर कोड एक तरह का कोड होता है जो स्मार्ट फोन के द्वारा तुरंत पढ़ा जाता है और बहुत ज्यादा सूचनाएं अपने में समाहित रखता है. क्यू. आर कोड का

सिर्फ खड़े होकर पानी देखने से आप नदी नहीं पार कर सकते।

डाटा (अल्ट्रा न्यूमेरिक, न्यूमेरिक, बायनरी अथवा कांजी) होता है. क्यू. आर. कोड के माध्यम से हम लोगों के मोबाइल से उनकी सूचनाएं और बैंकिंग सूचनाएं चुरा सकते हैं जो कि घातक है.

वीपीए-यूपीआई : यह वर्चुअल पेमेंट एक तरह का आईडेंटीफायर जो कि किसी भी खाता से यूनिक मिलाप कर लेता है. यूनीफायर पेमेंट इंटरफेस एक तरह की सेवा ग्राहक को प्रदान करता है कि वह अपने खाते का एक वीपी नं. बना ले ताकि वह अपने खाते से लेनदेन कर सके. यह सेवा व्यक्ति से व्यक्ति और माइक्रो भुगतान शीघ्रता से करती है. हमें अपना वीपीए बनाने के लिए किसी बैंक की मोबाइल वेस्ट-यूपीआई डाउनलोड करनी होगी, इसके बाद अपने बैंक का चुनाव करना होगा. इसके आगे अपने खाते का चुनाव करके अपने एटीएम कार्ड से सत्यापन करना होगा और अपना वीपीए बन जाएगा. तदुपरांत ट्रांजेक्सन के लिए एम-पिन बनाना होगा.

आजकल सभी बैंकों की अपनी-अपनी यूपीआई सेवाएं हैं. इसके अतिरिक्त भीम, गूगल पे, पेटीएम, एयरटेल पे यूपी आई सेवाएं प्रचलन में हैं.

ए.बी.पी.एस - आधार पेमेंट ब्रिज : इसके माध्यम से हम बैंकिंग के सभी खाता धारक जो भारत सरकार और राज्य सरकार की नीतियों और अनुदानों का लाभ लेती हैं, उनके खाते में प्रत्यक्ष धनराशि जमा कर सकते हैं.

एनईटीसी : भारतीय राष्ट्रीय भुगतान प्रणाली ने इस तकनीक का अविष्कार किया और बैंकों ने इसे राष्ट्रीय इलेक्ट्रानिक होल कलेक्शन नाम दिया. इसके माध्यम से सभी बैंकों ने अपनी- अपनी फॉशटैग स्कीम चलाई है.यह आरइआईडी स्टीकर होते हैं जो कि चार पहिया वाहनों पर उसके शीशे पर आगे लगे होते हैं. जब हम कहीं भी किसी भी टॉल से अपने वाहन के साथ गुजरते हैं तो फाशटैग से भुगतान हो जाता है. फॉश टैग लेने के लिए हम किसी भी बैंक से सम्पर्क कर सकते हैं.

सीटीएस : चेक लेनदेन प्रणाली इसके माध्यम से हम किसी भी बैंक का चेक कभी भी कहीं भी संग्रहण के लिए जमा कर सकते हैं. इससे चेक के संग्रहण में लगने वाले समय में बहुत बचत हुई है. सामान्यतया 24 से 48 घंटे में ऐसी चेकों का संग्रहण हो जाता है.

यू.एस.एस.डी(*99#) : यह एक तरह की मोबाइल सेवा है जो कि ग्रामीण इलाके के ग्राहकों के लिए ज्यादा उपयोगी है. चूंकि ग्रामीण क्षेत्रों के ग्राहक स्मार्ट फोन कम प्रयोग करते हैं. इसे नम्बर 2012 में भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम द्वारा शुरू किया गया. इसके द्वारा सामान्य मोबाइल से *99# डायल करने पर अपने खाते का शेष ज्ञात हो जाता है. यह सुविधा स्मार्ट फोन पर भी उपलब्ध है.

आधार आधारित भुगतान प्रणाली (एइपीएस) : वित्तीय समावेशन के समय इस तकनीक को खोजा गया और इसने बैंकिंग जगत की कार्य प्रणाली को बदल कर रख दिया. वित्तीय समावेशन जब लागू किया गय उस समय सभी ग्रामीण क्षेत्र बैंकों से जुडे नहीं थे. इसके आने के बाद बहुत से खाते खोले गए और ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंकिंग गतिविधियों में आशातीत वृद्धि हुई. इस प्रणाली में कोई भी ग्राहक कहीं से भी अपनी धनराशि निकाल सकता है, बशर्ते कि उसका खाता आधार लिंक हो.

भुगतान गेटवे : भुगतान गेटवे को सभी बैंकों ने बहुत अच्छी तरह से अपनाया है और इसका सदुपयोग कर अच्छी आमदनी मिल रही है. पेमेंट गेटवे एक तरीके से किसी भी खाते में पैसा प्राप्त करने की पद्धति है. जब से लोगों ने आन-लाइन पेमेंट को वरीयता दी है, तब से पेमेंट गेटवे को खूब बढावा मिला है. इसके माध्यम से हम स्कूल शुल्क, सरकारी बिल या धनराशि किसी भी खाते में जमा कर सकते हैं. सभी बैंको के पेमेन्ट गेटवे चार्ज लेते हैं रेल, हवाई टिकट की बुकिंग के समय हम इसका उपयोग करते हैं.

डिजिटल खाते खोलना : इस तकनीक का हम वर्तमान समय में पर्याप्त मात्रा में उपयोग कर रहे हैं. कोरोना काल में डिजिटल आधारित बैंकिंग सेवाओं का प्रयोग लोग घर में रहकर कर रहे हैं. इस प्रक्रिया में हम किसी भी बैंक की अधिकारिक वेवसाइट पर जाकर उस पर अपना नामांकन करते हैं और जरूरी दस्तावेज अपलोड करते हैं. दस्तावेजों की सत्यता की जांच ओटीपी भेज कर जांच की जाती है और बैंक कर्मचारियों द्वारा भी इन द्स्तावेजों की जांच की जाती है.

डोर स्टेप बैंकिंग : एक नए मार्गदर्शन के अनुसार अधिकांश बैंकों द्वारा डोर स्टेप बैंकिंग की जा रही है. इस तकनीक द्वारा ग्राहक के घर जाकर खाता खोलना, उन्हें नकदी भुगतान/जमा करना, चेक बुक तुरंत उपलब्ध कराना आदि सेवाएं शामिल हैं. इसमें एक वेंडर कम्पनी के साथ बैंक टाइ-अप करता है और उचित शुल्क के साथ डोर स्टेप बैंकिंग सुविधा ग्राहकों को प्रदान की जाती है.

क्लाउड और हाइब्रिड क्लाउड मॉडल : वर्तमान समय में क्लाउड और मिश्रित क्लाउड एक अच्छा माडल है. यह प्रणाली बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि हेतु एक उत्प्रेरक का कार्य करती है.

हाइब्रिड क्लाउड प्रणाली में हम उच्च श्रेणी के डाटा को हम बहुत ही सुरक्षित जगह में रखते है और सामान्य डाटा को कम सुरक्षित श्रेणी में रखते हैं. इस माडल से व्यापार के खर्चे हम कम कर सकते हैं.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस) : इस तकनीक का पिछले दो तीन वर्षों में बैंकिंग क्षेत्र में अधिक उपयोग हुआ है और बैंकिंग क्षेत्र ने तीव्र गति प्राप्त की है. इस तकनीक का उपयोग हम बैंकों में डाटा विश्लेषण में करते हैं और साथ में विभिन्न प्रकार की रचनात्क रिपोर्टों की रचना की जाती है. इसके अतिरिक्त इसके द्वारा ग्राहकों के विशेष वर्ग, कार्य प्रणाली, क्षेत्र तथा बाजार का अध्ययन किया जाता है. इस तकनीक से प्राप्त रिपोर्टों से बैंक अपने व्यापार को बढ़ाने में निर्णयन हेतु करता है.

स्मार्ट मशीन और रोबैटिक स्वचलित प्रक्रिया : आज की दौर की बैंकिग में हम स्मार्ट मशीन का प्रयोग करके अपने बैंक का डाटा बचाते हैं. इसके अंतर्गत रोबोटिक आधारित आटो मेशन प्रणाली में हम एक कमांड देकर रोबो को चालू करते है जैसे हम सब बैंक की साइट पर रोबो हेल्प पर देखते हैं.

बैंकिंग के क्षेत्र में जितना ज्यादा हम गूढ़ तकनीक का प्रयोग हम करते हैं, आन लाइन धोखा धडी की समस्या बढ़ती जाती है. इसके लिए ग्राहकों को किसी भी जानकारी को दूसरों के साथ साझा नहीं करनी चाहिए.

इस प्रकार हम देखते हैं कि बैंकों की नवीनतम तकनीक आज की आवश्यकता बन गई है और इसके प्रयोग से हम ग्राहकों की सेवा के साथ-साथ बैंक का समग्र व्यवसाय बड़ा सकते हैं. बैंकों के अस्तित्व और स्पर्धा के लिए नवीनतम तकनीक को लागू करना अनिवार्य है.

केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित ई अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 29/06/2021

कला तो सब में होती हैं फर्क बस इतना होता हैं किसी की छिप जाती हैं तो किसी की छप जाती हैं।

29 जून 2021 को केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई द्वारा आयोजित द्वितीय ई अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

लखनऊ के दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल

- महावीर प्रसाद मीना
क्षेत्रीय प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

रूमी दरवाजा

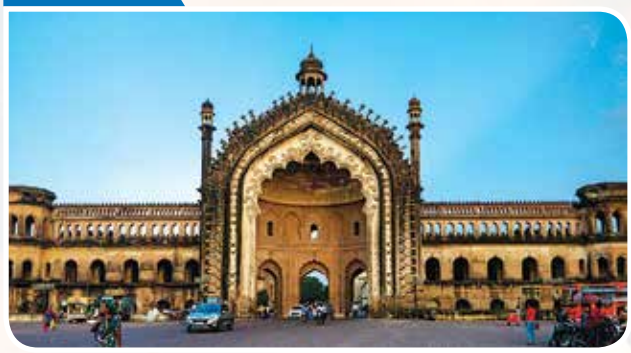

नवाबी अंदाज और आवाज के लिये मशहूर, शाने अवध की खूबसूरत शाम वाले शहर लखनऊ से शायद ही कोई अपरिचित हो, उत्तर प्रदेश की राजधानी है लखनऊ, जिसमें अनेक ऐतिहासिक इमारते हैं, जिनको देखकर आप आनंदित और अचंभित भी हो जायेंगे

लखनऊ में बड़ा इमामबाड़ा की तर्ज पर ही रूमी दरवाजे का निर्माण भी अकाल राहत प्रोजेक्ट के अन्तर्गत किया गया है। नवाब आसफउद्दौला ने यह दरवाजा 1783 ई. में अकाल के दौरान बनवाया था ताकि लोगों को रोजगार मिल सके। अवध वास्तुकला के प्रतीक इस दरवाजे को तुर्किश गेटवे कहा जाता है। रूमी दरवाजा कांस्टेनटिनोपल के दरवाजों के समान दिखाई देता है। यह इमारत 60 फीट ऊंची है।

बड़ा इमामबाड़ा

बड़े इमामबाड़े का निर्माण आसफ़उद्दौला ने 1784 में अकाल राहत परियोजना के अन्तर्गत करवाया था। यह विशाल गुम्बदनुमा हॉल 50 मीटर लंबा और 15 मीटर ऊंचा है। इमारत की छत तक जाने के लिए 84 सीढ़ियां हैं जो ऐसे रास्ते से जाती हैं जो किसी अन्जान व्यक्ति को भ्रम में डाल दें ताकि अवांछित व्यक्ति इसमें भटक जाए और बाहर न निकल सके. इसीलिए इसे भूलभुलैया कहा जाता है। इस इमारत की कल्पना और कारीगरी कमाल की है। ऐसे झरोखे बनाए गये हैं जहाँ वे मुख्य द्वारों से प्रविष्ट होने वाले हर व्यक्ति पर नज़र रखी जा सकती है जबकि झरोखे में बैठे व्यक्ति को वह नहीं देख सकता। ऊपर जाने के तंग रास्तों में ऐसी व्यवस्था की गयी है ताकि हवा और दिन का प्रकाश आता रहे. दीवारों को इस तकनीक से बनाया गया है ताकि यदि कोई फुसफुसाकर भी बात करे तो दूर तक भी वह आवाज साफ़ सुनाई पड़ती है।

छोटा इमामबाड़ा

लखनऊ में स्थित यह इमामबाड़ा मोहम्मद अली शाह की रचना है जिसका निर्माण 1837 ई. में किया गया था। इसे छोटा इमामबाड़ा भी कहा जाता है। माना जाता है कि मोहम्मद अली शाह को यहीं दफनाया गया था। इस इमामबाड़े में मोहम्मद अली शाह की बेटी और उसके पति का मकबरा भी बना हुआ है। मुख्य इमामबाड़े की चोटी पर सुनहरा गुम्बद है जिसे अली शाह और उसकी मां का मकबरा समझा जाता है। मकबरे के विपरीत दिशा में सतखंड नामक अधूरा घंटाघर है। 1840 ई. में अली शाह की मृत्यु के बाद इसका निर्माण रोक दिया गया था। उस समय 67 मीटर ऊँचे इस घंटाघर की चार मंजिल ही बनी थी। मोहर्रम के अवसर पर इस इमामबाड़े की आकर्षक सजावट की जाती है।

तब तक पैसे कमाओ जब तक परोपकारी रहो।

रेजीडेंसी

लखनऊ के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में से एक है, रेजीडेंसी में कई इमारतें शामिल हैं। इसका निर्माण नवाब आसफ-उद- दौला ने 1775 में शुरू किया करवाया था और 1800 ई. में इसे नवाब सादत अली खान के द्वारा पूरा करवाया गया। यह गोमती नदी के तट पर स्थित है। रेजीडेंसी के नाम से ही स्पष्ट है कि यह एक निवासस्थान है, यहां ब्रिटिश निवासी जनरल का निवास स्थान था, जो नवाबों की अदालत में ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधित्व किया करते थे। रेजीडेंसी की टूटी - फूटी दीवारों में आज भी तोप के गोलों के निशान बने हुए हैं। इस परिसर में एक खंडहर चर्च भी है जहां एक कब्रिस्तान है जिसमें लगभग 2000 अंग्रेज सैनिकों, आदमियों, औरतों और बच्चों की कब्र बनी हुई है। रेजीडेंसी में हर शाम को यहां के इतिहास पर प्रकाश ड़ाला जाता है। रेजीडेंसी परिसर में 1857 मेमोरियल म्यूजियम भी स्थापित किया गया है जहां 1857 में हुई भारत की आजादी की पहली क्रांति को बखूबी चित्रित किया गया है।

घंटाघर

लखनऊ का घंटाघर भारत का सबसे ऊंचा घंटाघर है। यह घंटाघर 1887 ई. में बनवाया गया था। इसे ब्रिटिश वास्तुकला के सबसे बेहतरीन नमूनों में माना जाता है। 221 फीट ऊंचे इस घंटाघर का निर्माण नवाब नसीरूद्दीन हैदर ने सर जार्ज कूपर के आगमन पर करवाया था। वे संयुक्त अवध प्रान्त के प्रथम लेफ्टिनेंट गवर्नर थे।

लखनऊ के उपरोक्त ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल चारबाग रेलवे स्टेशन से मात्र 4 किमी की दूरी पर हैं, लखनऊ एयरपोर्ट से इनकी दूरी मात्र 12 किमी है. यह सभी ऐतिहासिक स्थल लगभग 2 किमी की दूरी पर ही हैं. इनको देखने के लिये कम से कम दो से तीन दिन का समय चाहिये. इन सभी स्थलों में वास्तुकला का अदभुत, बारीक और बेजोड कार्य देखने को मिलता है. आप से अनुरोध है कि जब कभी भी लखनऊ आयें तो उपरोक्त ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों का दर्शन अवश्य करें.

गोटमार मेला

गोटमार मेले का आयोजन महाराष्ट्र की सीमा से लगे मध्यप्रदेश के छिंदवाडा जिले के पांढुरना कस्बे में हर वर्ष भादो मास के कृष्ण पक्ष में अमावस्या पोला त्यौहार के दूसरे दिन किया जाता है. मराठी भाषा बोलने वाले नागरिकों की इस क्षेत्र में बहुलता है और मराठी भाषा में गोटमार का अर्थ पत्थर मारना होता है. शब्द के अनुरूप मेले के दौरान पांढुरना और सावरगांव के बीच बहने वाली नदी के दोनों ओर काफी संख्या में लोग एकत्र होते हैं और सूर्योदय से सूर्यास्त तक पत्थर मारकर एक दूसरे का लहु बहाते हैं. इसकी शुरूआत 17 वीं ई के लगभग मानी जाती है. नगर के बीच में नदी के उस पार सावरगांव एवं इस पार को पांढुरना कहा जाता है. कृष्ण पक्ष के दिन यहां बैलों का त्यौहार पोला धूमधाम से मनाया जाता है. इसी दिन साबरगांव के लोग पलाश वृक्ष को काटकर जाम नदी के बीच गाडते हैं और उस वृक्ष पर लाल कपडा, तोरण, नारियल, हार और झाडियां चढाकर उसका पूजन किया जाता है. दूसरे दिन सुबह होते ही लोग उस वृक्ष की एवं झंडे की पूजा करते हैं और फिर प्रात: 08 बजे से शुरू हो जाता है एक दूसरे को पत्थर मारने का खेल. जैसे ही झंडा टूट जाता है, दोनों पक्ष पत्थर मारना बंद करके मेल मिलाप करते हैं और गाजे बाजे के साथ चंडी माता के मंदिर में झंडे को ले जाते हैं. झंडा न तोड पाने की स्थिति में शाम साढे छह बजे प्रशासन द्वारा आपस में समझौता कराकर गोटमार बंद कराया जाता है. पत्थरबाजी की इस परंपरा के दौरान जो लोग घायल होते हैं, उनका शिविरों में उपचार किया जाता है.

- अर्पण बाजपेयी
प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, छिंदवाडा

गंगासागर

- श्रीप्रकाश सिंह
एसडब्लुओ
आंचलिक कार्यालय, कोलकाता

गंगासागर तीर्थ स्थल कोलकाता से 120 कि.मी. दूर सागर दीप में अवस्थित है. महाराजा भागीरथ अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए कठिन तपस्या के बाद मां गंगा को पृथ्वी पर लाये थे. मां गंगा हरिद्वार से चलकर सागर दीप में समुद्र में विलिन हो जाती है. उस संगम स्थल को ही गंगासागर के नाम से जाना जाता है. वहीं पर कपिलमुनि का मन्दिर है. भागवत पुराण में वर्णन है कि कपिल मुनि भगवान विष्णु के छठे अवतार हैं. कपिल मुनि की माता का नाम देवहूति व पिता का नाम कर्दम ऋषि है. प्रत्येक वर्ष 14 जनवरी को मकर संक्रान्ति के अवसर पर देश - विदेश से लाखों संख्या में तीर्थयात्री / साधु सन्यासी पुण्य स्नान के लिए गंगासागर आते है. यहां धर्मराज युधिष्ठिर भी स्नान के लिए आये थे. वहां स्नान करके पूण्य कमाते है तथा कपिलमुनि मन्दिर में अपनी भक्ति-श्रद्धा के साथ पूजा करते है.

गंगासागर मेला पश्चिम बंगाल में आयोजित होने वाले सबसे बड़े मेलों में से एक है. इस मेले का आयोजन कोलकाता के निकट हुगली नदी के तट पर ठीक उस स्थान में किया जाता हे, जहां पर गंगा बंगाल की खाड़ी में मिलती है. इसलिए इस मेले का नाम गंगासागर मेला कहते है.

यह कहावत है कि 'सभी तीर्थ बार बार गंगासागर एक बार'.

गंगासागर जाने के लिए ट्रेन से हावड़ा या सियालदह रेलवे स्टेशन पर या हवाई जहाज से नेताजी सुभाष हवाई अड्डा, कोलकाता में उतर कर तथा धर्मतल्ला / बाबुघाट कोलकाता से बस अथवा निजी वाहन से कागदीप तक जाया जा सकता है. तत्पश्चात स्टीमर द्वारा नदी पार करके कूचबेरिया पहुंच कर वहां से बस अथवा निजी वाहन द्वारा गंगासागर/सागरदीप जा सकते है. यह मनोरम दीप पर्यटन के लिए भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है. कभी गंगासागर भ्रमण का कार्यक्रम बनाये.

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं।

राजस्थान के मेले

- पी ए गौड़,
वरिष्ठ प्रबंधक - राजभाषा
क्षे. का., जयपुर

जैसलमेर : डेजर्ट महोत्सव

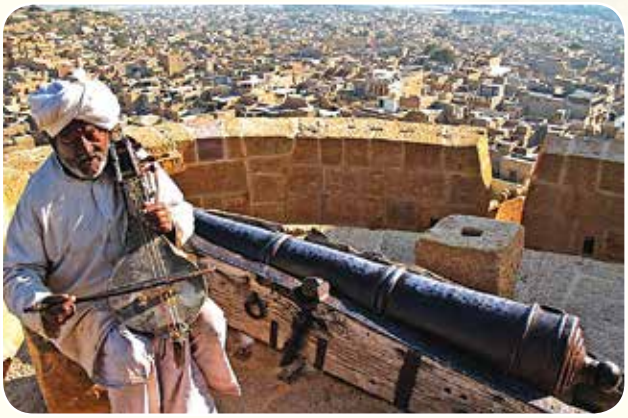

जीवन की आपाधापी में भारतीयों को अगर कुछ मनोरंजन एवं रोमांच का आनंद लेना है तो राजस्थान के पारम्परिक त्यौहारों का आनन्द लिया जा सकता है।

भारत की गोल्डन सिटी पाकिस्तान सीमा के निकट शहर का सबसे प्रमुख आकर्षण जैसलमेर का किला है, जिसे सोनार किला (गोल्डन फोर्ट) के नाम से जाना जाता है। जैसलमेर की स्थापना 1156 में रावल जैसल ने एक मिट्टी के किले के निर्माण के साथ की थी।

डेजर्ट महोत्व हर वर्ष फरवरी में आयोजित किया जात है जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, ऊंट दौड़, पगड़ी बांधने जैसे रीति रिजाजों, मूंछों की लम्बाई प्रतियोगिता जैसे कई कार्यक्रम लोकप्रिय हैं। जैसलमेर की रेगिस्तानी मिट्टी देशी एवं विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करती है। इस मेले में राजस्थान की कला एवं संस्कृति की पूर्ण छाप देखने को मिलती है। तीन दिवसीय मेले में स्थानीय तत्वों और विरासत पर अधिक बल दिया जाता है। मेले में राजस्थानी लोक गीत और नृत्य पर्यटकों के दिलों में अमिट छाप छोड़ती है।

डेजर्ट महोत्सव के दौरान आयोजित मेले में गेर नृत्य , मिस्टर डेजर्ट प्रतियोगिता विशेष आकर्षण का केन्द्र होती है। जैसलमेर के नजदीक सम जहां मिट्टी के टीबे हैं वहां रात्री के समय केम्प फायर एवं कालबेलिया नृत्य होते हैं। चांदनी आकाश में लोक गायकों की गूंज देवी-देवताओं तक को आल्हादित कर देती है।

जयपुर : गणगौर का मेला :

भारतीय कला एवं संस्कृति में मेलों का विशेष महत्व है। गणगौर का मेला राजस्थान में विविध रूपों में मनाया जाता है। मुख्यत: जयपुर में एक मेले के रूप में इसका आयोजन किया जाता है। हिन्दु पंचाग के चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन गणगौर का त्यौहार आता है। गणगौर के दिन कुवारी लड़कियां, नवविवाहिताएं एवं सुहागिन महिलाएं व्रत रखती है और शिव - पार्वती की पूजा करती है, जिससे उन्हें मनचाहा वर मिले और सुहागिन महिलाएं पति की लम्बी उम्र की कामना करती है।

जयपुर में सांयकाल दो दिन तक गणगौर के मेला देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र होता है। जयपुर के महाराजा के महल त्रिपोलिया गेट से सवारी निकलती है, जिसमें बड़ी संख्या में बैंड वाद्य समूह, बग्धीयां, हाथी, घोडे, ऊंट आदि गणगौर माता के आगे चलते हैं। यदि मेले के आरंभ से समापन तक की यात्रा का विहंगम चित्रण देखना है तो आइये, जयपुर के मेले का आनंद लें। मेले में सवारी गुजरने वाले बाजारों के आस-पास के भवन श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों से अटे होते हैं।

मेले में जयपुर की कला संस्कृति की झलक दिखती है, जिसमें अखाडे के पहलवानों, नर्तकों एवं कलाकारों का प्रदर्शन विशेष आकर्षण होता है। जयपुर के आस-पास के गांव के लोग जयपुर का सुप्रसिद्ध घेवर का आनंद ऊठाते हैं।

इस प्रकार से ये त्यौहार हमारे जीवन में उमंग और उत्साह का संचार करतें हैं. इससे जीवन रसमय बन जाता है.

अम्बुवाची पर्व

- अमित झा,
प्रबंधक, राजभाषा
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

अम्बुवाची पर्व, प्रति वर्ष विश्व प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर में मनाया जाता है. यह मंदिर असम की राजधानी दिसपुर के पास गुवाहाटी से 8 किलोमीटर दूर नीलाचल पर्वत पर स्थित है. यह मंदिर शक्ति की देवी सती का मंदिर है. यहीं भगवती की महामुद्रा स्थित है. देश भर मे अनेकों सिद्ध स्थान है जहाँ माता सुक्ष्म स्वरूप मे निवास करती है इन प्रमुख महाशक्तिपीठों में माता कामाख्या का यह मंदिर सुशोभित है.

यह अम्बुवाची पर्व भगवती (सती) का रजस्वला पर्व होता है. पौराणिक शास्त्रों के अनुसार सतयुग में यह पर्व 16 वर्ष में एक बार, द्वापर में 12 वर्ष में एक बार, त्रेता युग में 7 वर्ष में एक बार तथा कलिकाल में प्रत्येक वर्ष जून माह (आषाढ़) में तिथि के अनुसार मनाया जाता है. यह एक प्रचलित धारणा है कि देवी कामाख्या मासिक धर्म चक्र के माध्यम से तीन दिनों के लिए गुजरती है, इन तीन दिनों के दौरान, कामाख्या मंदिर के द्वार श्रद्धालुओं के लिए बंद कर दिए जाते हैं.

पौराणिक सत्य है कि अम्बूवाची पर्व के दौरान माँ भगवती रजस्वला होती हैं और मां भगवती की गर्भ गृह स्थित महामुद्रा से निरंतर तीन दिनों तक जल-प्रवाह के स्थान से रक्त प्रवाहित होता है. यह अपने आप में, इस कलिकाल में एक अद्भुत आश्चर्य का विलक्षण नजारा है.

इस बारे में 'राजराजेश्वरी कामाख्या रहस्य' एवं 'दस महाविद्याओं' नामक ग्रंथ के रचयिता एवं मां कामाख्या के अनन्य भक्त ज्योतिषी एवं वास्तु विशेषज्ञ डॉ. दिवाकर शर्मा ने बताया कि अम्बूवाची योग पर्व के दौरान मां भगवती के गर्भगृह के कपाट स्वत ही बंद हो जाते हैं और उनका दर्शन भी निषेध हो जाता है. इस पर्व की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पूरे विश्व से इस पर्व में तंत्र-मंत्र-यंत्र साधना हेतु सभी प्रकार की सिद्धियाँ एवं मंत्रों के पुरश्चरण हेतु, यहां देवी माता के भक्तों का बड़ा जमघट लगा रहता है. तीन दिनों के उपरांत मां भगवती की रजस्वला समाप्ति पर उनकी विशेष पूजा एवं साधना की जाती है.

देवी कनक दुर्गा मंदिर महोत्सव, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश (थेप्पोत्सवम)

श्रद्धा, आस्था एवं विश्वास के केन्द्र कनक दुर्गा मंदिर को अद्भुत कहें तो शायद कोई अतिश्योक्ति न होगी। जी हां, दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा स्थित कनक दुर्गा मंदिर की ख्याति दुनिया में ह।

विजयवाड़ा स्थित 'इंद्रकीलाद्री' नामक इस पर्वत पर निवास करने वाली माता कनक दुर्गेश्वरी का मंदिर आंध्रप्रदेश के मुख्य मंदिरों में एक है। यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ एक बार आकर इसके संस्मरण को पूरी जिंदगी नहीं भुलाया जा सकता है। माँ की कृपा पाने के लिए पूरे साल इस मंदिर में श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है । ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर में स्थापित कनक दुर्गा माँ की प्रतिमा 'स्वयंभू' है। इस मंदिर से जुड़ी एक पौराणिक कथा है कि एक बार राक्षसों ने अपने बल प्रयोग द्वारा पृथ्वी पर तबाही मचाई थी। तब अलग-अलग राक्षकों को मारने के लिए माता पार्वती ने अलग-अलग रूप धारित किए। उन्होंने शुंभ और निशुंभ को मारने के लिए कौशिकी, महिसासुर के वध के लिए महिसासुरमर्दिनी व दुर्गमसुर के लिए दुर्गा जैसे रूप धरे। कनक दुर्गा ने अपने एक श्रद्धालु 'कीलाणु' को पर्वत बनकर स्थापित होने का आदेश दिया, जिस पर वे निवास कर सकें।

दशहरे के नौ दिन देवी कनकदुर्गा को विशेष रूप से बालत्रिपुरा सुंदरी, गायत्री, अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा देवी, महिसासुरमर्दिनी और राजराजेश्वरी देवी के रूप में नवरात्रि में सजाया जाता है। विजयदशमी के अवसर पर देवियों को हंस के आकार की नावों पर स्थापित करके कृष्णा नदी का भ्रमण करवाया जाता है, जो 'थेप्पोत्सवम' के नाम से प्रचलित है। नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्रि के समापन और दशहरा के अवसर पर इस दिन आयुध पूजा का आयोजन किया जाता है। हर साल लगभग 40 करोड़ श्रद्धालू माता के दरबारा में दर्शन करने आते है। नवरात्रि के साथ साथ आषाढ़ माह में तीन दिन का शाकम्बरी महोत्सव भी मनाया जाता है जिसमे देवी कनक दुर्गा को विविधा सब्जियों एवं फलो से सजाया जाता है। कहते हैं यहाँ पर इंद्र देव भी भ्रमण करने आते हैं, इसलिए इस पर्वत का नाम इंद्रकीलाद्री पड़ गया। यहाँ की एक और खास बात यह भी है कि सामान्यत: देवता के बाएँ स्थान पर देवियों को स्थापित करने के रिवाज को तोड़ते हुए यहाँ पर मलेश्वर देव की दायीं दिशा में माता स्थापित हैं। इससे पता चलता है कि इस पर्वत पर शक्ति की अधिक महत्ता है।

विजयवाड़ा के केंद्र में स्थापित यह मंदिर रेल्वे स्टेशन से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। विजयवाड़ा हैदराबाद से 275 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह स्थान रेल, सड़क और वायु तीनों मार्गों से देश के सभी भागों से जुड़ा हुआ है।

आषाढ़ माह में सब्जियों एवं फलो से सजी माता शाकम्बरी देवी (कनक दुर्गा देवी)

गांठ खुल गई

- अनुराग चतुर्वेदी
वरिष्ठ प्रबंधक
करेन्सी चेस्ट, चंडीगढ़

ट्रीन.. ट्रीन.. फोन की घंटी बजी.. रतना अधनीदी सी बिस्तर पर लेटी हुई थी.. फोन सुनते ही उठ बैठी..

''हल्लो.. कौन... रमा.. हा बोल.'' रतना ने कहा

''हा.. जीजी.. मै कह रही थी.. कि कई सालो से भैया के पास राखी के समय नही जा पाये है.. सोच रही हूँ कि इस राखी अगर आप साथ चले तो भैया को राखी भी बांध देगे और....'' कहते कहते रमा का गला रुन्ध गया..

''रमा... ए.. रमा.. रो मत.... हम लोगो ने तो बहुत प्रयास किया कि राघव से मायका बना रहे... पर राघव ने तो सारे नाते रिश्ते...'' कहते कहते रतना भी फ़फ़क कर रोने लगी.

''जीजी... एक तुम ही हो जो फ़िर से अपने मायके के रास्ते खोल सकती हो .... भइया सिर्फ़ आप से ही मान सकते हैं.. याद करो जीजी.. जब हम छोटे थे.. तब भइया को मनाने का काम अम्मा भी तुम्हे दिया करती थी....अम्मा के बाद तुम्ही ने तो हम दोनो भाई बहन का पालन पोषण किया.. आप ना पढ पाई पर हम दोनो की शिक्षा मे कोई बाधा ना आने दी.... बाउ जी ने जब आप की शादी की बात शुरू की थी... तब.. तब जीजी आप ने ही जीजाजी से कोने मे ले जा कर कहा था.. 'मेरे भाई बहन की पढ़ाई अभी अधूरी है.. जब तक पुरी ना हो तब तक इंतजार कर सकते हैं क्या' और जीजाजी ने तुरन्त हामी भर दी थी. जीजी एक नहीं कितनी बार जीजाजी से कह कर भइया की प्राईवेट नौकरी लगवाई.. पर भैया को तो पी सी एस अधिकारी बन जाने का भूत सर पर सवार था.. और वो बने भी... पर पता नहीं...पर जब से बाउ जी गये तब से हम दोनो से क्या भूल हुई..ऐसी कौन सी गांठ है जो खुल नही पा रही हैं और भैया हम से दूर होते गये..'

रमा बोले जा रही थी...

'रमा....ये कैसी बात कर रही है भूल... वो भी हम दोनो से.. जिन बहनो ने अपने भाई का भविष्य बनाने के लिए अपने ससुराल मे कितनी बाते सुनी..... नही.. नही... ये हमारी भूल नही... ये राघव का अभिमान था जिस ने हम बहनो को अपने स्तर का ना समझते हुए दूरी बनाई.. रही सही कसर उस के ब्याह के बाद रजनी ने पूरी कर दी... बड़े बाप की इकलौती बेटी... उस ने भी हम सब की ओर कभी नही देखा.. पता नही क्या पट्टी पढाई उस ने... कि राघव ने हम लोगो से बात करना भी बन्द कर दिया.. कभी कभार फ़ोन लगाया भी तो हमेशा रजनी ने ही फ़ोन उठाया.. और कहा कि' अभी सो रहे हैं ... अभी नहा रहे है... वगैरह वगैरह बहाने सुन ने को मिलते रहे.. पर अब इतने दिनो बाद.... वो भी राखी पर...' रतना ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी.

'जीजी... चलो ना जीजी चलते है... एक बार और प्रयास करते है और भैया को सरप्राईज भी देते हैं.. देखेगे कि रजनी भाभी और भैया का क्या रवैया रहता है.

'चल ठीक है... परसो राखी है... यहाँ से मै तेरे जीजाजी को बोल कर टैक्सी करवा लेती हूँ.. और फ़िर मै और तू सुबह निकल जायेगे.. ठीक है ना.. रमा.. अब खुश...चल रख फ़ोन.. शोपिन्ग भी तो कर ले.. खाली हाथ तो जायेगे नही..' कहते हुये रतना एक दम प्रफुल्लित हो गई..

'हा... हा.. जीजी रखो फ़ोन.. मै भी बाजार जाती हूँ और शाम को दिखाती हूँ कि क्या क्या लाई..' रमा ने कहा और फ़ोन रख दिया..

शाम को जगदीश दुकान से लौट कर आये तो रतना जल्दी से चाय बना कर ले आयी और उन के सामने सारा सामान रख दिया जो बाजार से वो खरीद कर लाई थी..

तब तक मोहन और राखी भी आ गये .. 'अरे वाह माँ... इतना सारा सामान.. कहा से खरीद लाई.. किस के लिए है' मोहन की बहू राखी जो अपना पार्लर चलाती है बोल पडी.

मोहन भी बोल पड़ा' क्या बात है माँ.. बता भी दो किस के लिए लाई हो..

'बताती हूँ... बताती हूँ... राखी.. तेरे और मोहन की चाय भी बनी रखी है पहले वो ले आ..... और सुन मठरी भी बनाई है ताजी ताजी.. तुझे और मोहन को पसन्द है वो भी साथ लेती आना.' रतना बोल पडी ..

'क्यो...भाई. .मै नही खा सकता क्या तुम्हारी बनाई मठरी.'

ये जगदीश थे.. मन्द मन्द मुस्कान लिये बोल पड़े..

'नही.. नही.. ये बात नही है.. मै जल्दी मे भूल गयी..' कहते हुए रतना ने सारा सामान लिफ़ाफ़ो से निकालना शुरू कर दिया.. तब तक राखी भी चाय और मठरी ले कर आ गयी..

'दिखाओ ना माँ... क्या क्या लाई हो.. और किस किस के लिये..' राखी और मोहन साथ साथ बोल पड़े..

'मै और तुम्हारी मौसी... इस बार राखी पर.. राघव मामा के पास जा रहे हैं.' कहते हुए रतना ने सभी की प्रतिक्रिया जानने को सब के चेहरे देखे...

'मामा के घर... और आप....' मोहन ने कहा...

जगदीश की आखे भी कुछ यही सवाल रतना से पुछना चाह रही थी.. और राखी ... उसे तो शादी के बाद आज ही पता चल रहा था कि मोहन के मामा भी है..

'हा.... जा रही हूँ... रमा का बहुत मन है... और....' रतना इतना कह कर चुप हो गई..

'और तुम्हारा.... तुम्हारा मन नही है..' रतना की ओर देखते हुए जगदीश ने कहा..

'.....हा.....हा.. है. पर संकोच.. भी है.' रतना ने कहा

'इतने दिनो बाद जा रही हूं... खाली हाथ तो जाउगी नही.. तो सोचा सबके लिये कुछ लेती जाउ.. ये राघव के लिए कुर्ता पजामा.. ये रजनी की साडी और ये उसकी बहु के लिये सोने की चेन.....पहली बार देखुगी उसे.. और मनोज के लिये अंगूठी.. बाकी मिठाई तुम कल ला देना परसो के लिये टैक्सी भी बुक कर देना.

'वाह... माँ.. बहुत ही बढिया किया और सभी सामान बहुत अच्छा है.. आप को जरूर जाना चाहिए.. मै मोहन और पापा को अपने साथ भइया के घर ले जायेगे.. मुझे भी तो जाना है ना.. राखी ने कहा..

'हा.. मुझे याद है कि तुझे भी राखी पर घर जाना है.. तेरे भाई और भाभी के लिये भी कुछ लाई हूँ.' कहते हुए रतना ने एक बडा पैकेट राखी को थमा दिया.

'ओ... वाह... माँ.. यु आर ग्रेट..कहते हुये राखी रतना से लिपट गयी... कल पहले आप को पार्लर ले चलुगी.. आप को ग्रूम कर के भेजूगी आप के मायके... मौसी जी को भी बुला लेती हूँ.. यही से आप दोनो चले जाना ...'

राखी ने कहा..

'ठीक है.. मौसी से तू बोल दे कि कल यही आ जाये..' रतना ने कहा

'जी.... मै मौसी को अभी फ़ोन कर के कल सुबह ही बुला लेती हूँ' राखी ने कहा और सब चाय पीने लगे..

चाय के कप राखी ने उठाये और किचन की ओर बढ़ गयी..

'इतने दिन बाद जा रही हो... मन मे कोई मलाल ले कर मत जाना.... त्योहार है उसे हंसी खुशी मना कर आना.' कहते हुए जगदीश भी बाथ रूम चले गये..

रतना ने सारा सामान एक बैग मे रख लिया और अपने कमरे मे चली गई.

राखी वाले दिन दोनों बहने सुबह ही चल पडी ...दिल्ली से गुरग्राम है ही कितनी दूर... ये सोच कर कि कम से कम जल्दी पहुच कर भैया को चकित कर देगे..

सुबह ट्रैफ़िक कम होने के कारण दोनों आठ बजे राघव के घर पहुच गयी...

रमा ने अपनी बचपन की आदत अनुसार भइया के घर की घंटी बजाई और रतना के साथ एक कोने मे खडी हो गयी.. जिस से आई होल से भी ना दिखे कि कौन है..

'रजनी..... रजनी.. जरा देखो तो.. दरवाजे पर कोई है.' राघव ने अपने कुर्ते के बटन लगाते हुये कहा.

'आती हूँ' कहते हुए रजनी अपनी साडी संभालते हुए आ गयी. '...आप तैयार हो गये... और मै भी. जल्दी निकलेगे तभी सरप्राईज का आनंद है.. जीजी भी चौक जायेगी. इस बार का रक्षा बंधन यादगार रहेगा.' कहते कहते रजनी ने आई होल से झाँका.. कोई दिखा नही..

'लगता है पेपर वाला होगा'... कहते हुए रजनी ने दरवाजा खोल दिया..

'कौन है... पेपर भी नही है....' रजनी ने इधर उधर देखा...

तब तक रमा और रतना पीछे से उसके सामने आ गयी..

'भाभी.....' ये रमा थी..

रजनी ने पलट के देखा तो..... मारे खुशी के उसके आँखो मे आँसु आ गये ...

'जीजी.. .....' रजनी के मुंह से हल्की सी चीख निकल गयी. . 'आप दोनों.. .यहा.... अरे.. .देखिए तो सही.. जल्दी आइये....' रजनी तो जैसे बावरी सी हो गई थी..

तब तक राघव भी दरवाजे पर आ गया..'जीजी.... रमा...' कहते हुए दोनों बहनो से राघव लिपट गया...

'मुझे माफ़ कर दो...जीजी... मुझे माफ़ कर दो ...' राघव के आंखों से अश्रु धारा लगातार बह रही थी... जीजी, रमा, रजनी. राघव.. और तब तक राघव के बेटा बहु सब दरवाजे पर पहुच गये थे...

रक्षाबन्धन पर इतना सुन्दर दृष्य देख कर सभी की आंख भर आयी थी... सभी गांठ खुल कर आंसूओ मे बही जा रही थी.

फरिश्ता

- एस. पी. मेहंदीरत्ता
सहायक प्रबंधक
शाखा बावल

श्री ओ. पी. शर्मा एक सरकारी बैंक में मुख्य प्रबंधक थे तथा दिल्ली के पोश इलाके मे स्थित शाखा में शाखा प्रंबधक के पद पर नियुक्त थें. उन के परममित्र श्री आर.के.गुप्ता भी उसी बैंक में सहायक महाप्रबंधक थे तथा दिल्ली में ही क्षेत्रीय कार्यालय में नियुक्त थें. दोनो में घनिष्ट मित्रता थी. दरअसल, दोनो एक ही कालेज में पढें थे तथा क्लासमेट थें. दोनो का एक दूसरें के घर अक्सर आना-जाना होता था.

गुप्ता जी की बिटिया का रिश्ता हुए छः माह हो गये थे तथा शादी के दिन का जितनी बेसबरी से गुप्ता जी के परिवार को इतंजार था उतना ही शर्मा जी के परिवार को भी. शर्मा जी के कोई संतान नही थी अतः गुप्ता जी के बच्चों को अपनी संतान के बराबर ही प्यार देते थे. अतंतः वो दिन आ ही गया. शादी के दों-तीन दिन पूर्व से ही शर्मा जी का गुप्ता जी के धर आना-जाना लगा रहा तथा वे गुप्ता जी के कार्यो में हाथ बटातें रहें. आज शाम को ही शादी थी. शर्मा जी शाम को तैयार हो कर पत्नी के साथ शादी समारोह में शरीक होने के लिए बडे चाव से निकल पडें.

शादी धूमधाम से सम्पन्न हुई. गुप्ता जी ने बारातियों के सत्कार में कोई कसर नही रखी थी. शादी में बैंक के सी. एम. डी. साहब विशेषतौर पर मुम्बई से आए थें व अनेक महाप्रबधंक व उच्च अधिकारी भी बारात की शोभा बढा रहे थें. रात को 12 बजे शर्मा जी ने गुप्ता जी से विदाई ली और धर की तरफ निकल पडें. शादी मे सब कुछ ठीक हो गया परन्तु शर्मा जी से कुछ ऐसा हो गया कि पूरे रास्ते कार में सनाटा पसरा था. ना शर्मा जी कुछ बोल रहे थे ना ही उन की पत्नी. ऐसा लग रहा था जैसे कार मे केवल शर्मा जी अकेले ही हो. पूरे एक घण्टे के सफर के दौरान कार में खामोशी छाई रही.

कोठी पर कार से उतर कर श्रीमती शर्मा सीधे अन्दर चली गई और शर्मा जी कार पार्किंग में लगा कर कमरें में आए और कपडे बदल कर बिस्तर पर लेट कर आने वाले तूफान का इंतजार करने लगे. श्रीमती शर्मा भी थोडी देर पश्चात चेंज करके कमरे में आई ओर बिना कुछ बोले दिवार की तरफ मुह करके लेट गई. कुछ पल गहरी खमोशी छाई रही. कमरे की खामोशी श्रीमती शर्मा के शब्दों से टूटी..... आज भी करवा ली बेज्जती. हर बार जब भी साथ जाती हू यही डर रहता है सब कुछ ठीक से हो जाऐं. शादी मेंउस दो कोड़ी की औरत के मुह लगने की क्या जरूरत थी.... कधें पर टयूबलाईट उठा कर खडी थी अपने और साथियों के साथ. पर नही... साहब की तो आदत है हर समय छोटे लोगों के मुह लगने की. फिर चाहे शादी में कंधे पर टयूब लाईट लिए महिला हों या खाना परोसने वाला वेटर, कोई भीख मागंता भिखारी, शनिवार को तेल मागंने वाला या कधें पर फावड़ा लिए चलता राहगीर.... साहब को तो इन्टरव्यू लेने का रोग है.... सभी के दुखडे इन्होने ही दूर करने का ठेका ले रखा है शहर में..... पूरे बैंक में मशहूर हो चुके है..... दूसरें अधिकारियो की पत्नियॉ चाहे आमन-सामने से मिले या फोन पर बात हो बस घूम फिर कर पूछ ही लेती है, शर्मा जी, अब किस का इन्टरव्यू ले रहे है. श्रीमती शर्मा बिना रूके एक स्वर में बोली जा रही थी उनकी सहन शक्ति आज जवाब दे चुकी थी, दिल से क्रोध की चिंगारियॉ निकल रही थी ऐसा लग रहा था जैस बीच चौराहे किसी ने बेइज्जत कर दिया हो. थोडी खमोशी के बाद, श्रीमती शर्मा फिर शुरू हो गई..... ईधर साहब उस टयूबलाईट वाली का इन्टरव्यू ले रहे थे उधर पास में खडे अधिकारी और उनकी पत्नियॉ कटीली मुस्कान के साथ मुझे देख रही थी, श्री महेश्वरी जी, सहायक महाप्रबधंक तो मुस्करा रहे थे और कह रहे थे, भाभी जी, आपकी कोठी तो मैन रोड़ पर है वही एक आफिस शर्मा जी को खुलवा दिजिए आते-जाते का इन्टरव्यू लेते रहेगें. अब तो हद हो गई पानी सिर से उपर बहने लगा है, अब मैं और ज्यादा इस घर में नही रह सकती लोगो के ताने सहन करने की मेरी हिम्मत अब जवाब दे चूकी है.

श्रीमती शर्मा कुछ आक्रामक मूड में आते हुए शर्मा जी की तरफ करवट बदलते हुए लगभग चिल्लाते हुए बोली ..... आखिर मै पूछती हू तुम्हे कोई बिमारी है क्या? और अगर है तो उस का ईलाज करवाओ.... ऐसी हरकते मत करो कि लोग हम पर हसें. मै पूछती हू क्या जरूरत थी उस औरत से सवाल-जवाब करने की और वह भी इतने महत्वपर्ण मेहमानों के बीच.

श्री शर्मा चुपचाप सुने जा रहे थे, ऐसा पहले भी कई बार हो चुका था, परन्तु आज श्रीमती शर्मा का एक-एक शब्द विषैले तीर की तरह उनके कोमल हृदय को तार-तार किये जा रहा था. ऐसा लग रहा था जैसे कोई उनके हलक में तेजाब उल्हेडे जा रहा हों. उनपर गहरी बेहाशी छाने लगी, उनके मन मस्तिष्क पर अतीत की यादें एक चल-चरित्र की तरह प्रदर्शित होने लगी. एक लम्बी खमोशी के बाद उन के होंठ बुदबुदाऐ.... टूटे-फूटे शब्द उनके होठों से बाहर आने लगें..... उन का गला रूंधा हुआ था..... मै क्यॉ करू..... मैने अपने बचपन में गरीबी का नंगा नाच देखा है, मौत आने पर आदमी एक दिन मरता है परन्तु गरीबी मे आदमी हर पल मरता है ... हमारा भरा पूरा परिवार था.... पिता जी छोटा-मोटा व्यवसास करते थे.... किसी तरह गुजर-बसर हो रही थी.... जब मै 10 वर्ष का था पिता जी की दुर्घटना में मौत हो गई..... मॉ सदमें को सहन नही कर पाई..... पूरा एक महीना बेहोशी में रही, जो थोडा बहुत पैसा था उन के ईलाज में खर्च हो गया, सीमा और गीता बहनों पर मुसीबतों का पहाड गिर पड़ा, उन की पढाई छूट गई..... कई बार तो घर पर खाना भी नही बनता था..... मॉ

कोई भी महान व्यक्ति अवसरों की कमी के बारे में शिकायत नहीं करता।

आसपास के घरो मे सफाई का काम करती थी .... कभी बीमार हो जाए तो लोग मदद करने की बजाऐ ताना मारते थे... शीला, रोज रोज बीमारी का बहाना लगा कर बैठती हो हम किसी और को रख लेगें फिर मत रोना..... मै खून का धूट पी कर रह जाता और बेरहम लोग मॉ की बीमारी में मदद करने की बजाऐ उन के महीने की पगार में से पैसे काट लेते थे.....

थोडी देर फिर खमोशी छा गई, पता नही क्यू श्रीमती शर्मा का ध्यान शर्मा जी के एक-एक शब्द पर लगा था. शर्मा जी फिर बुदबदानें लगें...कभी किराना वाला उधार देने से मना करता तो कभी दूध वाला. सभी को बस पैसे चाहिए थे... चारों और निराशा ही निराशा. मॉ कई बार निराश हो कर कहती थी बस अब मुझ से और नही हो सकता मैं आत्महत्या कर लूगीं. कोई रिश्तेदार नजदीक नही आता था..... फिर बुदबुदाऐं, पर हर इंसान हैवान नही होता..... समाज में दयालु लोग भी है जो किसी की डूबती नैया को बचा लेते है..... ऐसे ही रहम दिल लोगों में भगवान सिंह जी थे जो पिता जी के मित्र थे, पास में रहते थे और स्कूल में टीचर थे ....मै एक दिन गली में खडा था वे मेरे पास आकर बोले बेटा,पढता है क्या? मैने कहा नही, मॉ के पास मेरी पढाई के पैसे नही है.....वे भले इंसान थे बोले बेटा पढोगे नही तो आगे कैसे बढोगें.. उन्होने मुझे अपने स्कूल में दाखिला दिला दिया और हैडमास्टर साहब से कह कर मेरी फीस माफ करा दी और अपने खर्च से मुझे किताबे-कापीयॉ दिला कर मदद की. दोनो बहनों का दाखिला भी उन्होने करवाया था और फीस माफ करवा दी थी. मैने फर्स्ट क्लास से मैटिक पास कर लीं ... घर के पास में ही एक बैंक अधिकारी गुप्ता जी किराए पर रहते थे, मॉ उन के घर मे सफाई और खाना बनाने जाती थी...भले इंसान थे, मॉ ने उन्हे बताया, बेटे ने मैटिक फर्स्ट क्लास से पास कर ली है. उन्होने मुझे बुलवाया और बैंक के एग्जाम की तैयारी करवाने लगे ... कुछ ही दिनों में बैंक की वेकेन्सी निकली उन्होने मुझ से अपने ही खर्च पर फार्म भरवाया और अपने साथ एग्जाम दिलवाने ले गयें..... इतने भले इंसान कि बस-गाडी का किराया भी स्वय् ही खर्च किया और शीध्र ही मेरी नौकरी बैंक में पास के गाव में लग गई. उन्होने ही मुझे समझाया बेटा अभी रूकना नही है नौकरी के साथ-साथ पढ़ना है ओर आगे बढना है. कुछ ही दिनो पश्चात उन का तबादला कही दूर हो गया... कृतज्ञतावश जब मैने उन के पैर छुए और कहा मास्टर जी और आप ना होते तो मेरा भविष्य अधंकारमय ही रह जाता. वे मुस्कराए ओर बोले बेटा उपर वाले पर हमेशा भरोसा रखना, कभी अपने पद का घमंड ना करना और हो सके तो किसी की मदद करना. इतने भले इंसान कि जाते हुए मॉ के पैर छू कर आर्शीवाद लिया और घर पर काम करवाने के लिए माफी मांगी.

पता नही क्यू किसी भी गरीब असहाय को देखता हू तो मेरे कदम अपने आप उस की ओर बढ़ जाते है.

शनिवार को तेल मागंने वाले को जो तुम थोडा सा तेल देती थी. मेरे पूछने पर उसने मुझे बताया था वह डिप्लोमा होल्डर था और काम ना मिलने के कारण शनिवार को तेल मागंता था. मैने उसे कुछ लोन दिलवाया आज उस ने अपना काम चला रखा है. पड़ोस का जो मकान बन रहा है उस में ईटे उठाने वाले मजदूर से मैने बात की थी और तुम ने एतराज किया था. वह मजदूर 12वी पास था. मैने उस का हौसला बढाया और कुछ मदद की आज वह अच्छा काम कर रहा है और 700-800 रूपये रोज कमा रहा है.

आज जो शादी में ट्यूबलाईट उठाऐ औरत को देखा मुझ से उस का दर्द सहा नही जा रहा था, एक हाथ से बगल में छोटे से बच्चे को उठाऐ और एक हाथ से कधें पर ट्यूबलाईट उठाऐं कितना दर्दनाक था. किसी को दया नही आतीं. उसने मुझे बताया उस का पति नही है और उसका लडका मैटिक पास है वह पास में ही खड़ा था उसने भी एक ट्यूबलाईट भी उठा रखी थी. मैने उसके लडके को कल बैंक में बुलाया है ईश्वर की कृपा सें उसके लिए कोई ना कोई अच्छा सा काम मिल जाएगा.

आज हमारे पास कोठी है, गाडी है, हम ब्राडेंड कपडे पहनते है पर मै उस समय को नही भूल पाता जब मेरे पास दूसरो के दिये हुए फटे पुराने कपड़े ही थें. तुम अक्सर पूछती हो मै प्रतिदिन सुबह कमरा बन्द करके दस मिन्ट क्या करता हू????? आज मै राज खोलता हू.... उस कमरे में ताला लगें सन्दूक को बैंक जाने से पहले मै

रोज खोलता हू उस में रखे अपने फटे-पुराने कपड़ो को, मेरी माता जी की टूटी हुई हवाई चप्पल और फटी हुई साडी को देखता हू और अपने अतीत को याद करके ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि वो किसी असहाय, किसी गरीब की मदद करने मे मेरी सहायता करें. शर्मा जी का गला रूधने लगा...थोडी देर रूकने पर फिर बुदबदाने लगें.....हॉ, मुझे दुख है मेरी वजह से तुम्हे नीचा देखना पड़ता है..... सभी की हंसी का पात्र बनना पडता है. पर मै क्या करू मै मजबूर हू. मैने जीवन मै उंचाई ओर निचाई दोनो को देखा है. लोग उंचाई पर पहुॅच कर सब कुछ भूल जाते है, अपने मद में चूर हो जाते है, पर मै अपने अतीत को भुला नही पाता. किसी भी गरीब असहाय को देखता हू तो मेरे कदम अपने आप उस की ओर बढ़ने लग जाते है.

अचानक शर्मा जी के कानों में किसी की सिसंकियों की आवाज टकराने से उनकी तंद्रा टूटी. उन्होने देखा उनकी पत्नि उन की बगल मे बैठी हुई जोर-जोर से सिसकियॉ ले रही थी और अपने आँचल से अपने आसूओं को बार-बार पोछ रही थी. शर्मा जी ने भी महसूस किया उन का कालरॅ उनके अपने ही आसूओं से भीग चुका था. शर्मा जी की पत्नी ने रूधें गले से अपनी गलती की क्षमा मागीं और भविष्य में स्वय् भी उन का साथ देने का विश्वास दिलाया.

राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार
कार्यालय में सरकार की राजभाषा नीति का कार्यान्वयन कार्यालय प्रमुख की जिम्मेदारी है.

प्रतिज्ञा

- बीरपाल सिंह
प्रबंधक (राजभाषा),
क्षे.का. कानपुर

प्रण करना, वचन देना और प्रतिज्ञा करना, हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं. व्यक्ति का व्यक्तित्व, उसकी वचन बद्धता पर निर्भर करता है. इसी बात को ध्यान में रखते हुए महापुरुषों ने कहा है कि बहुत ही सोच समझकर बोलो और अपने वचन का पालन करो. वर्तमान समय में लोग सुबह दिए गए वचन को शाम को भूल जाते हैं और यह कहने में कतई संकोच नहीं करते हैं कि उन्होंने कोई बात या वचन दिया था. वचन या प्रतिज्ञा के महत्व को स्वामी विवेकानंद के कथन से समझ सकते हैं:- "अपनी प्रतिज्ञा का पालन करो. काम के लिए जो समय निर्धारित किया है, उसे समय पर करें, अन्यथा लोगों का विश्वास आपसे उठ जाएगा". प्रतिज्ञा का महत्व व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक जीवन और देश काल की सीमाओं के परे है :-

व्यक्तित्व विकास का आधार : हमारी वचनबद्धता हमारे व्यक्तित्व का निर्धारण करती है. विद्वान लोग रात को सोने से पहले अगले दिन की दिनचर्या का निर्धारण करते हैं और उसका कठोरता से पालन करते हैं. इसीलिए कहा गया है कि समझदार व्यक्ति अपने प्रति कठोर और दूसरे के प्रति नम्र होता है. अगर हम सुबह घड़ी/मोबाइल के अलार्म के साथ नहीं जगते हैं तो भले ही दूसरों के सामने हमारी स्थिति में अंतर न आता हो, लेकिन हम अपनी ही नजरों में गिर जाते हैं. परिणामस्वरूप कुंठा पैदा होती है. यही कुंठा की भावना अनजाने हमारे व्यक्तित्व विकास में सबसे बड़ी बाधक बन जाती है और हम आलसी होकर रुग्ण भी हो सकते हैं और आज का काम कल पर टालने की आदत बन जाती है. अत: वचनबद्धता की शुरुआत स्वयं से करना चाहिए.

पारिवारिक एवं सामाजिक विकास का आधार : पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में हम देखते हैं कि घर के सदस्य और समाज में हमसे जुड़े लोग हमारे उपदेशों की तुलना में हमारे आचरण से ज्यादा प्रभावित होते हैं. घर में बच्चे हमारे आदतों का बहुत ही ध्यानपूर्वक अनुसरण करते हैं और यदि हम अपने काम के प्रति वचनबद्ध हैं तो सामान्यतया हमारे बच्चे भी ऐसा करते हैं. इस प्रकार हम एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं.

कर्तव्यों के सुचारुरूप से निर्वहन का आधार : एक परिवार के पालन पोषण से लेकर दैनिक रूप से अपने कर्तव्यों के पालन में हमारी वचनबद्धता विशेष रूप से सहायक होती है. कार्यस्थल में योजना बनाकर हमें कार्य करना पड़ता है और यदि हम योजना के अनुरूप स्वयं को प्रतिज्ञाबद्ध नहीं करते हैं तो निश्चित रूप से हम एक निश्चित समय में अपनी मंजिल को नहीं पा सकते हैं. अत: हमें अपने प्रति सदैव वचनबद्ध होना चाहिए.

राष्ट्र के समग्र विकास का आधार : किसी देश के नागरिक राष्ट्र की प्रगति की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है. नागरिकों की शिक्षा, संस्कृति और देश की प्रगति का आधार हमारी वचनबद्धता ही होती है. विश्व के सभी देशों के राष्ट्र प्रमुखों, मंत्रियों और महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत पदाधिकारियों को शपथ दिलाने का सबसे महत्वपूर्ण कारण वचनबद्धता का पालन करना होता है.

वचन पालन का सीधा सम्बंध हमारी प्रगति से है. संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सदैव प्रतिज्ञाबद्ध रहे हैं. देवव्रत आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करते हुए अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा लेने के कारण भीष्म पितामह कहलाए. राजा दशरथ ने महारानी कैकेई को दो वचन देकर प्राणप्रिय राम को वन भेज दिया. राजा हरिश्चंद्र वचन पालन के कारण सत्यवादी कहलाए. हमारे देश की संस्कृति एवं सभ्यता वचन पालन के इतिहास से भरी पड़ी है. लेकिन समय के परिवर्तन के साथ आज सामान्य नागरिक से लेकर राजनेताओं के विशिष्ट कथनों का भी महत्व दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है. वचनबद्ध व्यक्ति का नाम और यश बहुत तेजी से समाज में फैलता है. इसी लिए कबीर दास जी ने कहा है : कथनी मीठी खांड सी, करनी विष की लोय, कथनी तजि करनी करे, विष से अमृत होय.

संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में सरकार की राजभाषा नीति सम्बधी निर्देश दिये गये हैं.

21.06.2021 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के सुअवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर में क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एल.बी. झा, श्री विनोद तिवारी, मुख्य प्रबंधक श्री मनोज सिन्हा, मु.प्र., संदीप जायसवाल, व.प्र., श्री मनेश यादव, सुरक्षा अधिकारी, श्री तनय जायसवाल, सरोज कुमार राय, शुभ लक्ष्मी शर्मा राजभाषा अधिकारी

हिन्दी में सर्वोत्तम कार्य करने हेतु श्री दिनेश कुमार को पुरस्कृत करते हुए श्री डी. एन. राजेन्द्र कुमार फील्ड महाप्रबंधक कोलकाता अंचल

त्रिची में राजभाषा प्रदर्शनी

क्षेत्रीय कार्यालय त्रिची में सुविचार एवं हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया

पुरस्कार

दिनांक 11.06.2021 को नराकास द्वारा आयोजित ऑनलाइन छमाही बैठक में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय दुर्गापुर को जुलाई-दिसम्बर 2020 हेतु बेहतर कार्यनिष्पादन हेतु प्रदत्त राजभाषा विशिष्ट पुरस्कार की ट्रॉफी के साथ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री जॉय मुखर्जी, मुख्य प्रबंधक श्री अजय कुमार एंव जयंत दास, राजभाषा अधिकारी सुश्री रानू साव तथा अन्य सदस्य

दिनांक 11.06.2021 को नराकास द्वारा आयोजित ऑनलाइन छमाही बैठक में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय दुर्गापुर को जुलाई-दिसम्बर 2020 हेतु में बेहतर कार्यनिष्पादन हेतु राजभाषा विशिष्ट पुरस्कार नराकास के सदस्य सचिव श्री कमलेन्दु मिश्रा से ग्रहण करती हुई श्रीमती रानू साव बैरवा, राजभाषा अधिकारी.

दि. 02.08.2021 को गोरखपुर श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक गोरखपुर ने श्री सोनम कुमार, आई.पी.एस. सिटी गोरखपुर को 10 ट्रैफिक बैरिकेडिंग भेंट कियें इस मौके पर श्री विमल कुमार सिंह, सीओ., कोतवाली, श्री अरविंद कुमार राय, इंस्पेक्टर एवं श्री बबलू कुमार, चौकी इंचार्ज/ बेनीगंज सहित. अपने बैंक के श्री विनोद तिवारी, मुख्य प्रबंधक/परिचालन, श्री परविंदर सिंह भाटिया, मुख्य प्रबंधक, श्री संदीप जायसवाल, व. प्र., सुश्री अंजली कुमारी, शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, नरेंद्र कुमार उपस्थित थे.

पूना आंचलिक कार्यालय में अंतराष्ट्रीय योग दिवस.

दिनांक 27 मई 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय छिंदवाडा में आयोजित शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक में श्री जावेद अख्तर, शाखा प्रबंधक तिरोडी को सम्मानित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक श्री मेहेर कुमार पाणीग्राही.

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आंचलिक कार्यालय अहमदाबाद द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों के लिए योग पर आधारित ऑनलाईन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया.

आंचलिक कार्यालय पुणे के तत्वावधान में दिनांक 14 अप्रैल 2021 को अंबेडकर जयंती के मौके पर पुणे नगर के ख्यातिप्राप्त एवं सामाजिक वेल्फेयर अधिकारी के साथ आंचलिक कार्यालय पुणे के अन्य कार्मिक भी परिलक्षित

जिस दिन आपके हस्ताक्षर ऑटोग्राफ में बदल जाएंगे, उस दिन आप बड़े आदमी बन जाऐंगे।

सैयादों का मुखिया

- राकेश राव
वरिष्ठ प्रबंधक -सूचना तकनीक
क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

कल रात अचानक बचपन में सुनी एक कहानी याद हो आई, सोचा आप सभी से सांझा कर दूँ। तो, बात यूँ है कि किसी जमाने में एक बड़ा ही खुशबाश गांव हुआ करता था। लोग भी बड़े ही सीधे ओर सच्चे थे। आपस मे सभी बडे प्रेम प्यार से रहते थे, एक दूसरे के सभी सुख दुख सांझे करते थे। मुखिया भी उन्हीं में से एक था सो वह भी उन्हीं के जैसा नेकदिल और सबका हमदर्द था। बडी हंसी खुशी सबके दिन बीत रहे थे...

खैर हुआ यूं के एक दिन मुखिया ने, जो कि उम्रदराज हो चुका था, गांव वालों से कहा कि अब उन्हें एक नया मुखिया चुन लेना चाहिए। गांव वाले इसी सोच में लगे थे कि नया मुखिया कौन हो कि इसी बीच गांव का ही एक लडका जो कि उच्च शिक्षा के लिए गांव से बाहर गया हुआ था, गांव लौट आया। वह चूंकि युवा भी था और पढा लिखा भी, तो गांव वालों ने तय किया कि उसे ही नया मुखिया बनाया जाए। इस तरह गांव के नए मुखिया ने पदभार सम्भाल लिया। नए मुखिया ने भी गांव की भलाई के लिए कई अच्छे काम करवाए, लोग बहुत खुश थे और हर काम में मुखिया का पूरा साथ देते थे।

एक दिन मुखिया ने कहा कि गांव में एक पंचायत की खाली जमीन है जिसका कोई उपयोग नहीं हो रहा। इसलिए सब लोग मिल कर उसमें फलों के पेड लगा दें ताकि सबको ठंडी छांव और मीठे फल खाने को मिलें। ऐसा ही हुआ भी, और कुछ ही समय मे वहाँ एक बडा ही सुंदर फलों का बगीचा बन गया। बहुत से सुंदर सुंदर पंछी भी बगीचे में चहचहाने लगे और महौल बहुत ही खुशनुमा हो गया।

इधर गांव से कुछ दूर बहेलियों की बस्ती थी। बहेलिए, पंछी पकडने वाले, उनका शिकार और खदीद फरोख्त करने वाले। उन्होंने जब देखा कि बगीचे में तो नाना प्रकार के पंछी चारों और से आते हैं और रहते भी हैं, तो उन्हें यह जगह एक मालामाल करने वाली शिकारगाह नजर आने लगी। इसी के चलते उन्होंने बडे साजो समान उपहार वगैरह लेकर एक दिन नए मुखिया से भेंट की और उस से बगीचे में रहने की इजाजत मांगी। इसके साथ ही उन्होंने मुखिया को बगीचे के फलों से लाभ कमाकर देने की भी पेशकश की। मुखिया राजी हो गया। और इस तरह बेदर्द शिकारी खुशनुमा बगीचे में घुस आए। उन्होंने बगीचे में बाड भी लगवा दी और गांव वालों का आना भी बंद करवा दिया। अब वे खुल कर मासूम पंछियों का शिकार और व्यापार करने लगे और साथ ही साथ बगीचे से मिलने वाले सभी तरह के उत्पाद का लाभ भी। मुखिया को भी बराबर सभी तरह के व्यापार का लाभ पहुंचने लगा और वह भी मालामाल हो गया। किंतु इससे गांव वाले बहुत दुखी हो गए कि मासूस पंछियों का शिकार हो रहा है और गांव की सम्पदा को लूटा जा रहा है। उन्होंने कई बार मुखिया से इसकी गुहार लगाई मगर सब बेसूद!! आखिर गांव वालों ने शहर के बडे हाकिम से इसकी शिकायत की। हाकिम ने गांव वालों कि बात को जायज पाया और हुक्म जारी किया कि बहेलियों को फौरन बगीचे से बाहर किया जाए और गांव से भी।

हुक्म मुखिया के पास पहुंचा। उसने भी अपने हमसाये बहेलियों को तलब किया और फरमान उनके सामने रख दिया। कुछ देर सोचने के बाद बहेलियों ने मुखिया से कहा कि वैसे तो हम लगभग तमाम पंछियों का शिकार कर ही चुके हैं लेकिन हम चाहते हैं कि जो बचे हैं, जाते जाते उनका भी काम तमाम कर ही दें। इसलिए आप हाकिम से सामान वगैरह उठाने और कूच का बंदोबस्त करने कि लिए चार महिने का वक्त मांग लें। इस से हाकिम भी नाराज नहीं होगा और हमारा और आपका नुकसान भी नहीं होगा। मुखिया ने ऐसा ही किया। बहेलिए अपने काम पर चल दिए।

इधर मुखिया अपने मन में सोच रहा था कि बेवकुफ गांव वालों को यह मालूम ही नहीं कि मुझ इसका अंदेशा पहले ही हो गया था। अगर जंगली बहेलिए एक बगीचे से इतका फायदा उठा सकते हैं तो मेरे पास तो पूरा गांव था, लेकिन बेचारे गांव वाले उस तरफ देख ही न पाए। मुखिया ने आईने में खुद को देख कर आंख दबाई और एक कुटिल हंसी हंस दिया। सब खुश थे हाकिम का हुक्म बजाया जा रहा था, बहेलियों ने बगीचे का पूरा पूरा फायदा उठा लिया था, मुखिया भी नई जगह अपना व्यापार जमाने की तैयारी मुकम्मल कर रहा था। वह खुश था... वैसे भी उसके लिए इस गांव में बचा ही क्या था।

पाटलिपुत्र की नगर वधू

- कृष्ण प्रताप सिह
(राजभाषा) प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

एक सुंदर, आकर्षक युवा तपस्वी अपने हाथ में कमंडल लिये हुये पाटलिपुत्र के राजमार्ग से तेज गति से चलता चला जा रहा था. राजमार्ग के दोनों तरफ नगर के गणमान्य लोगों की अटटालिकायें बनी हुई थीं उन्हीं में नगरवधू की भी अटटालिका भी थी. वो अपने भवन के प्रथम तल के छज्जे पर खडी होकर पाटलीपुत्र के राजमार्ग के वैभव को निहार रही थी कि उसकी निगाह युवा तपस्वी पर पडी, आध्यामिकता से परिपूर्ण व्यक्तित्व ने उसे सम्मोहित कर दिया. वह भागकर नीचे आयी और उन्होने अपनी दासी से कहा कि जाकर आदर से तपस्वी को बुला लाओ मैं उनसे मिल कर दर्शन करना चाहती हूं. दासी ने मार्ग पर आकर तपस्वी से करबद्ध प्रार्थना करी कि उसकी स्वामिनी उनके दर्शन और आर्शीवाद की आकांक्षी हैं, कृपया थोडा समय देने की कृपा करें, तपस्वी महोदय ने मौन सहमति दी और नगरवधू की अटटालिका में पहुंचे. नगर वधू ने एक ऊंचे और स्वच्छ आसन पर उनको बैठाया एवं बडे आदर से उनके पांव पखारे, दोनों हाथ जोड कर उसने आर्त स्वर में प्रार्थना करी कि कृपया आज रात्रि यहीं विश्राम करें याचिनी के नेत्र और वाणी से तपस्वी उसके मन का भाव पढ लिये उन्होंने मुस्करा कर कहा कि अभी मैं एक बहुत ही आवश्यक कार्य से जा रहा हूं कुछ दिन बाद वापसी में आऊंगा तब आपकी इच्छा पूरी करूंगा. एक क्षण को शांत होकर उन्होंने नगरवधू को देखा और अपने कमंडल से एक बहुत ताजा और लाल सेब निकाल कर उसको दिया और कहा कि इसको संभाल कर रखना, जब मैं लौट कर आऊंगा इसको मुझे देना. नगरवधू ने बहुत ही सुंदर कपडे में सेब को रखा और प्रतिदिन उसको आदर से निहारती कुछ दिन बाद सेब की चमक कम हो गई वो गुलगुला हो गया, कुछ दिन बाद वो सडने लगा उसमें से बास आने लगी, कपडे में दाग आ गया अंतत: नगरवधू ने उसे फेंक दिया. लगभग दो माह बाद अचानक तपस्वी लौट कर आये, नगरवधू हतप्रभ सी हो गई उसने तत्काल तपस्वी जी को आसन पर बैठाया उनका आदर से पैर पखारा और विनीत भाव से करबद्ध होकर जमीन पर बैठ गई. तपस्वी ने कुशलक्षेम पूंछने के बाद पूछा मेरी अमानत कहां है - वो दुखी होकर आर्त स्वर में बोली महोदय वो तो सडकर बह रहा था उसमें से बदबू आ रही थी तो मैने उसे फेंक दिया - तपस्वी जी ने अपनी ओज पूर्ण सारगर्भित वाणी में कहा कि आपकी समझ में जीवन का सच आया, वो बोली नहीं. तपस्वी जी बोले कि आप भी आज उस सेब की तरह हो, कल आपकी गति भी सेब की तरह होगी, हम सब के जीवन का यही सत्य है और मनुष्य जीवन का यही यथार्थ है. नगरवधू की आंखों से आंसुओं की अविरल धारा बहने लगी उसके मन का विकार आंसुओं में बह गया मन निर्मल हो गया, उसको समझ में आ गया कि बह सदैव इतनी रूपवती और युवा नहीं रहेगी उसकी भी वृद्धावस्था आयगी वह तपस्वी जी के श्री चरणों में गिर पड़ी और उनकी शिष्या बन गयी. और उसने तत्कालीन श्री लंका और चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार किया - यह तपस्वी भगवान बुद्ध थे.

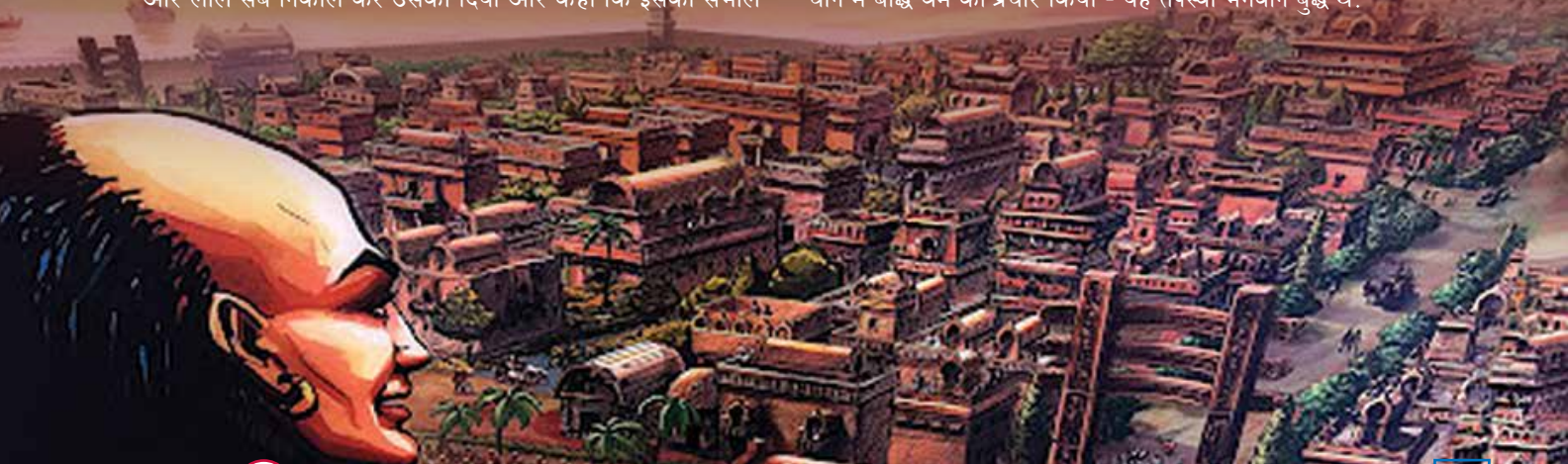

कोशिश करना न छोड़े, गुच्छे की आखिरी चाबी भी ताला खोल सकती हैं।

स्वास्थ्य प्रबंधन

- सचिन दहीवले
वरिष्ठ प्रबंधक, विधि क्षे. का., रायपुर

स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव है. हालांकि इस जीवनशैली को हासिल करने में ज्यादा मेहनत नहीं लगती लेकिन कई लोग व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं, दृढ़ संकल्प की कमी, व्यक्तिगत मुद्दों और सबसे खास बात कि स्वास्थ्य को प्राथमिकता पर न रखने जैसे कई कारणों से इसका पालन नहीं कर पाते हैं. आजकल एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने के लिए बहुत दृढ़ संकल्प लेना पड़ता है. पूरे दिन के दौरान इतने सारे कार्यों को एक साथ पूरा करते हुए हमारा स्वास्थ्य का संतुलन अक्सर बिगड़ जाता है. स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने और उसे हासिल किया जा सकता है यह समझना महत्वपूर्ण है. हमारी पीढ़ी कम्प्यूटर, मोबाइल, बर्गर, पिज्जा और देर रात की पार्टियों पर आधारित है - मूल रूप से ये सब नुकसानदायक है. पेशेवर नजरिये और व्यक्तिगत मुद्दों ने सभी को जकड़ लिया है और इन सभी शारीरिक व मानसिक अराजकताओं के बीच वे अपना स्वास्थ्य खो रहे हैं. इन दिनों लोग अपने दैनिक जीवन में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे भूल गए हैं कि एक स्वस्थ जीवन जीने के क्या मायने हैं. स्वस्थ जीवन शैली का अर्थ है स्वस्थ आहार खाने जैसी अच्छी आदतों का पालन करना, नियमित व्यायाम करना और रात में पर्याप्त नींद लेने के लिए समय निकालना. विभिन्न बीमारियों को दूर रखने और पूरी तरह से निरोगी जीवन जीने के लिए स्वस्थ जीवन शैली का पालन करना आवश्यक है.

स्वस्थ जीवनशैली का महत्व

हमारे बुजुर्ग अक्सर पौष्टिक भोजन खाने, समय पर सोने और प्रत्येक दिन समय पर जागने पर जोर देते हैं. वे हमें आसपास के स्थानों पर वाहनों का उपयोग करने की बजाए पैदल चलने को भी कहते हैं. हालांकि हम में से अधिकांश उनकी सलाह की उपेक्षा करते हैं और हमारे अस्वास्थ्यकर दिनचर्या का पालन करना जारी रखते हैं. वे जो भी सुझाव देते हैं वह बिल्कुल सही है. एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करना महत्वपूर्ण है. स्वस्थ आदतों की ओर रुख करने की आवश्यकता पर इन दिनों हर जगह जोर दिया जा रहा है. यहां बताया गया है कि क्यों एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करना महत्वपूर्ण है:

- यह आपको अधिक संगठित और आपकी उत्पादकता को बढ़ाता है.
- यह आपको शारीरिक रूप से फिट रखता है और स्वास्थ्य समस्याओं को दूर रखता है.
- तनाव मुक्त रहने का यह एक शानदार तरीका है.
- यह सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है.
- यह हमें हमारे परिवार तथा प्रियजनों के और करीब ले जाता है.

धूम्रपान, शराब पीना, जंक फूड जैसे अस्वास्थ्यकर कामों में शामिल होना, मोबाईल, कंप्यूटर और टीवी स्क्रीन पर बहुत अधिक समय बिताने से कई गंभीर बीमारियां हो सकती हैं और इनसे बचने की कोशिश करनी चाहिए.

अस्वस्थ आदतें कैसे छोड़ें?

हालांकि हम में से अधिकांश अस्वास्थ्यकर की आदतों के बारे में जानते हैं, जो हमारे अंदर होती हैं और बहुत से लोग इसे छोड़ने का प्रयास भी करते हैं पर हम अक्सर ऐसा नहीं कर पाते. आप सिर्फ एक दिन उठकर अपनी अस्वस्थ आदतों को छोड़ने का फैसला नहीं कर सकते जिसका पालन अब तक आपने किया है. इस तरह की आदतों को छोड़ने के लिए बहुत से प्रयासों की आवश्यकता पड़ती है खासकर यदि आप लंबे समय से उनका अनुसरण करते रहे हैं.

लिखकर रखें

पहला काम जो आपको करना चाहिए वह यह है कि आप उन बुरी आदतों को लिख लें जो आपके अंदर शामिल हैं और वो सकारात्मक प्रभाव आप अपने जीवन में ला सकते हैं यदि आप इसे छोड़ देते हैं. इसे उस जगह पर चिपकाएं जहां आप इसे अक्सर पढ़ सकते हैं यह आपके लिए प्रेरणा के रूप में काम कर सकती है.

दोस्ती का प्रभाव

दोस्ती हमारी आदतों को काफी हद तक प्रभावित करती है. यदि आप ऐसे लोगों के साथ रहते हैं जो शराब पीने और धूम्रपान करने में लगे रहते हैं तो आपको इन आदतों को छोड़ना मुश्किल होगा. ऐसे लोगों के साथ आपके संपर्क को समाप्त करने का समय है.

उत्तेजनात्मक चीजों से बचें

कई चीजें हैं जो उत्तेजना को बढ़ाने के रूप में कार्य कर सकती हैं. उदाहरण के लिए यदि आप शराब के साथ सिगरेट पीते हैं तो आपको

अपनी पीने की आदत में कटौती करनी होगी. यदि आपको टीवी देखते हुए चिप्स और कुकीज़ खाने की आदत है तो आपको टीवी देखने का समय कम करना होगा.

विकल्प तलाशना होगा

बोरियत और तनाव कुछ ऐसे सामान्य कारण हैं जिनसे लोग धूम्रपान, शराब पीना, मोबाइल या टीवी स्क्रीन पर बड़ी मात्रा में समय खर्च करने जैसी अस्वस्थ आदतों को अपना लेते हैं.

ऐसी गतिविधियों में शामिल होने के बजाए आपको सही दिशा में अपनी ऊर्जा को गति देने का प्रयास करना चाहिए. उदाहरण के लिए आप अपने खाली समय के दौरान किसी चीज का अनुसरण कर सकते हैं. उदाहरण के लिए आप अपने पालतू के साथ खेल सकते हैं, चित्रकारी कर सकते हैं, बागवानी कर सकते हैं या जो आपके रुचिकर काम हो.

स्वस्थ आदतें जिनका पालन किया जाना चाहिए

एक स्वस्थ आहार योजना का पालन करें

जब आप एक स्वस्थ जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं तो एक स्वस्थ आहार योजना का पालन करना बेहद महत्वपूर्ण है. एक स्वस्थ आहार योजना का पालन करना शुरू करें जिसमें सभी आवश्यक पोषक तत्वों को शामिल किया गया हो और उसमें जंक फूड की मात्रा बिल्कुल भी ना हो.

जल्दी उठे

ज्यादातर लोग व्यायाम करने, नाश्ता करने और सुबह के समय अपने प्रियजनों के साथ कुछ गुणवत्ता के क्षण बिताने में नाकाम रहते हैं क्योंकि वे समय पर जाग नहीं पाते. हर सुबह जल्दी उठने की आदत बनाए ताकि आपके पास इन सभी कार्यों को समायोजित करने के लिए पर्याप्त समय हो.

व्यायाम

अपनी पसंद के शारीरिक व्यायाम करने के लिए प्रत्येक दिन कम से कम आधे घंटे का समय निकाल लें. चलना, तैरना, योग का अभ्यास, गहन साँस लेने या किसी और चीज़ को भी पसंद कर सकते हैं. यह तनाव दूर करने में मदद करता है.

समय पर सोएं

चूंकि आपको जल्दी जागना है इसलिए समय पर सोना आवश्यक है. आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आप हर दिन कम से कम 7-8 घंटे की नींद लेंगे.

अपने मोबाइल को एक तरफ रखें

जब आप उत्पादकता को बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं तो अपने फोन को भी अपने से दूर रखने की आदत बनाए. जब भी आप अपने घर पर रहते हैं और अपने परिवार के साथ गुणवत्ता का समय बिताते हैं तो अपने फोन को एक दूरी पर रखें. मोबाइल फोन द्वारा उत्सर्जित किरणें हानिकारक होती हैं इसलिए इसे रात में सोते समय विशेष रूप से दूर रखे.

सकारात्मक संगत से जुड़ें

उन लोगों को दोस्त बनना हमेशा अच्छा होता है जो आपके जीवन में सकारात्मकता लाते हैं और उनसे दूर रहना चाहिए जो नकारात्मक बोल बोलने में लगे रहते हैं. इसके अलावा उन लोगों के साथ मेल-जोल बढ़ाएं जो स्वस्थ जीवन शैली का पालन करते हैं बजाए उनके जो नियमित रूप से धूम्रपान या शराब पीने जैसी अस्वास्थ्यकर आदतों में शामिल होते हैं. सकारात्मक किताबों का साथ हमेशा से सबसे बेहतर संगत के रूप में रहा है.

समय पर अपना भोजन करें

जितना एक स्वस्थ आहार योजना का पालन करना ज़रूरी है उतना ही समय पर अपना भोजन जरूरी है. सुनिश्चित करें कि आप अपने नाश्ते या दिन के किसी भी अन्य समय के भोजन को नहीं छोड़ेंगे और अपने भोजन को सही अंतराल पर खाएंगे. यह भी सुझाव दिया जाता है कि दिन में तीन बार खाने की बजाए 5-6 बार थोड़ा-थोड़ा भोजन करना चाहिए.

अपनी रुचि का पालन करें

हम में से ज्यादातर अपने काम में इतने तल्लीन हैं कि हम अपने हितों और शौकों का पालन करने का समय निकालना भूल जाते हैं. अपने पसंद का बागवानी, पढ़ना, लिखना या कुछ ऐसे शौकों का पालन करना एक अच्छा विचार है. यह अस्वस्थ आदतों के लिए एक अच्छा प्रतिस्थापन के रूप में कार्य करता है और तनाव को दूर बनाए रखने में भी मदद करता है.

किसी जानकार की सहायता प्राप्त करें

जब आप अपने द्वारा विकसित व्यसनों से छुटकारा मिलने की सोच रहें है और ऊपरी उपाय आपकी मदद नहीं कर पाते तो यह पेशेवर मदद लेने का समय है. आपको अपने स्वास्थ्य को हल्के में नहीं लेना चाहिए. यदि आपने समय रहते स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया है तो अब यह स्वस्थ जीवन शैली की तरफ मुड़ने का समय है.

एक स्वस्थ जीवन शैली विकसित करने में कुछ समय लगता है खासकर यदि आप ऊपर साझा की गई अस्वास्थ्यकर आदतों से ग्रस्त हैं तो. काम आसान तो नहीं है लेकिन निश्चित रूपसे करने लायक ज़रूर है. यदि आप बेहतर स्वास्थ्य की योजना बना रहे हैं तो देर न करें.

'स्वास्थ्य ही धन है'. वास्तव में ऐसा लगता है कि हमारी पीढ़ी इसे भूल गई है. दूसरी चीजों को छोड़ जिस तरह से आप जी रहे हैं उस जीवन शैली की ओर विचार करने का समय है. जो जीवन शैली आप जी रहे है उससे आप अधिक धन कमा सकते हैं, परन्तु इससे आप अपना जीवन काल छोटा कर रहे हैं. अभी भी समय है अगर हम अपनी प्राथमिकताओं में कुछ बदलाव करें तो यह हमारे लिए वाकई लाभकारी सिद्ध होगा.

जिस चीज में आपका हित हैं उसे करने का कोई निश्चित समय नही होता। चाहे कितना भी विलम्ब हो।

रसोई घर से

- सुश्री विजयाकमला गुरूदंती
सहायक प्रबंधक, सीपीपीसी विभाग
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

गन पावडर / पोडी / चटणी

सामग्री :

1 कप - उड़द दाल

¼ कप - चना दाल

1 डंडी कडीपत्ता - धोकर और सुखा कर लें

लाल मिर्च - 8 से 10 (रूची के अनुसार)

सभी सामग्री सुखी ही अच्छी तरह से भुन लें. अंत में गैस बंद करने के बाद (छोटा ईमली का टुकडा, थोड़ी हल्दी) डालें.

ठंडा होने के बाद इसे मिक्सर में स्वादानुसार नमक डाल के बारीक पिस लें.

अदरक ईमली की चटनी (आंध्रा पद्धति से)

सामग्री :

1 कप - अदरक साफ कर के बारीक काट लें

1 कप - गुड़

1 बड़े निंबू के आकार इतनी ईमली

नमक स्वादानुसार

तड़के के लिए - 1 बड़ा चम्मच - उड़द डाल
½ चम्मच - राई (सरसो)
हिंग एवं 4 से 5 लाल मिर्च

विधी :

एक कप में एक कप पानी में ईमली उबाले. उबलने पर उसमें चम्मच हल्दी, अदरक, गुड़ एवं स्वादानुसार नमक डालें. गुड़ पुरी तरह से पिघलने तक पकायें. मिक्चर को ठंडा होने दें. उसके बाद उसमें ऊपर दिये हुए तड़के की सामग्री से तड़का लगाये एवं अच्छी तरह बारीक पिस लें.

यह चटणी 1 माह तक फ्रिज में ताजी रह सकती है.

सब्जी मसाला पोडी

1 कप - उड़द दाल

¼ कप - चना दाल

1/8 कप - मूग दाल

2 बड़ा चम्मच - सफेद तिल

2 बड़ा चम्मच - धनिया सुखा धनिया)

10 से 12 दाना मेथी

8 से 10 लाल मिर्च

सभी सामग्री सुखी ही अच्छी तरह से भुन लें. ठंडा कर के मिक्सर में पावडर बना लें.

यह पावडर सुखी सब्जियों जैसे बैंगन, भिंडी, कुंद्रु, सुरण, गवार आदि में डाली जाती है.

टमाटर - प्याज़ चटणी

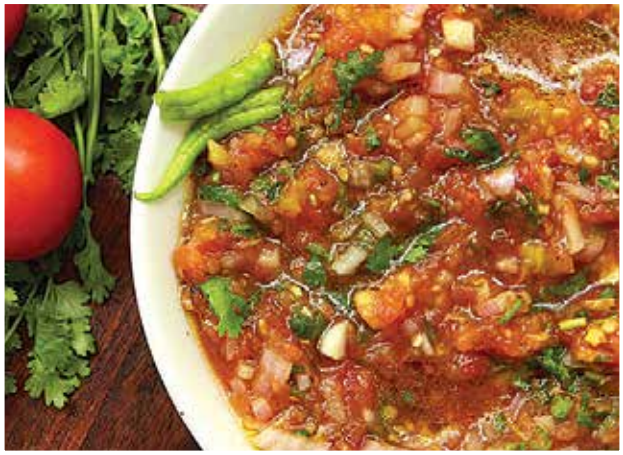

सामग्री :

4 बड़े टमाटर

1 बड़ा प्याज़

1 से 2 हरी मिर्च

नमक (स्वादानुसार)

तड़के के लिए

1 चम्मच - उड़द दाल

1 चम्मच - राई

¼ चम्मच - हिंग

4 से 5 सुखी लाल मिर्च (रूची के अनुसार)

विधी :

एक कप में बड़ा चम्मच तेल गरम कर लें, फिर उसमें उड़द दाल, राई डालें. राई तड़कने एवं उड़द डाल का रंग हल्का लाल होने के बाद उसमें हींग और सुखी लाल मिर्च डालें.

कप से निकालकर ठंडा होने पर मिक्सर में डालें. बाद में, उसी कप में एक छोटा चम्मच तेल डालकर कटा हुआ प्याज़ डालकर पका लें, उसमें टमाटर एवं हरी मिर्च डालें. टमाटर अच्छी तरह से पकने पर उसमें थोड़ी हल्दी एवं नमक डालकर गैस बंद कर लें और ठंडा होने के बाद थोड़ा हरा धनिया डालकर तड़के के साथ अच्छी तरह बारीक पिस लें.

ईडली, दोसा, वड़ा, चावल के साथ बैढ़िया स्वाद लगता है.

सांबर पावडर

सामग्री :

1 कप - साबुत धनिया

2 बड़ा चम्मच - उड़द दाल

8 से 10 - काली मिर्च

5 से 6 - मेथी दाणा

8 - सुखी लाल मिर्च

सुखा नरियल - ¼ कप (चाहिए तो डालें)

(आप इसमें कच्चा नरियल साबंर बनाते वक्त डाल सकते है - कच्चा नरियल सांबर पावडर के साथ पिस लें)

पहले मेथी दाना कम आंच पर लाल रंग आने तक भुन लें और एक थाली में निकाल लें. फिर उड़द दाल हल्के लाल रंग तक भुन लें. उसके बाद काली मिर्च और लाल मिर्च अच्छी तरह खस्ता होने तक सेक लें. बाद में सुखा धनिया भुन लें. सभी सामग्री ठंडे होने के बाद एकत्रित कर मिक्सर में पावडर बना लें. (अगर आप इसमें सूखा नारियल मिलाते है तो उसे फ्रिज में रखें)

आपकी पसंद की जो सब्जी चाहिए वो लेकर पानी में हल्दी एवं नमक डालकर उबाल लें. सब्जी आधी पकने के बाद उसमें बड़ा चम्मच ईमली का पेस्ट डालकर उबाल लें. उसमें पकी और मसलकर राहर दाल डालें. दो चम्मच सांबर डालकर अच्छी तरह पकायें.

गैस से उतार कर तड़के के लिए - एक बड़ा चम्मच तेल गरम करके उसमें राई, लाल मिर्च, हींग, मीठा नीम पत्ता डालें व यह तड़का सांबर में डालें. चावल, ईडली, दोसा इत्यादि के साथ खाकर आनंद उठायें.

संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया इसलिए प्रति वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सुप्रसिद्ध लेखक

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर (21 जून 1912- 11 अप्रैल 2009) हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक थे जिन्होने अनेकों लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक तथा यात्रा संस्मरण लिखे। उनकी कृतियों में देशप्रेम, राष्ट्रवाद, तथा सामाजिक विकास मुख्य भाव हैं।

जीवन परिचय

विष्णु प्रभाकर का जन्म उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के गांव मीरापुर में हुआ था। उनके पिता दुर्गा प्रसाद धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे और उनकी माता महादेवी पढ़ी-लिखी महिला थीं जिन्होंने अपने समय मे पर्दा प्रथा का विरोध किया था। उनकी पत्नी का नाम सुशीला था। विष्णु प्रभाकर की आरंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई। बाद में वे अपने मामा के घर हिसार चले गये जो तब पंजाब प्रांत का हिस्सा था। घर की माली हालत ठीक नहीं होने के चलते वे आगे की पढाई ठीक से नहीं कर पाए और गृहस्थी चलाने के लिए उन्हें सरकारी नौकरी करनी पडी। चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी के तौर पर काम करते समय उन्हें प्रतिमाह 18 रुपये मिलते थे, लेकिन मेधावी और लगनशील विष्णु ने पढाई जारी रखी और हिन्दी में प्रभाकर व हिन्दी भूषण की उपाधि के साथ ही संस्कृत में प्रज्ञा और अंग्रेजी में बी.ए की डिग्री प्राप्त की। विष्णु प्रभाकर पर महात्मा गाँधी के दर्शन और सिद्धांतों का गहरा असर पडा। इसके चलते ही उनका रुझान कांग्रेस की तरफ हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के महासमर में उन्होंने अपनी लेखनी का भी एक उद्देश्य बना लिया, जो आजादी के लिए सतत संघर्षरत रही। अपने दौर के लेखकों में वे प्रेमचंद, यशपाल, जैनेंद्र और अज्ञेय जैसे महारथियों के सहयात्री रहे, लेकिन रचना के क्षेत्र में उनकी एक अलग पहचान रही।

विष्णु प्रभाकर ने पहला नाटक लिखा- हत्या के बाद, हिसार में नाटक मंडली में भी काम किया और बाद के दिनों में लेखन को ही अपनी जीविका बना लिया। आजादी के बाद वे नई दिल्ली आ गये और सितम्बर 1955 में आकाशवाणी में नाट्य निर्देशक के तौर पर नियुक्त हो गये जहाँ उन्होंने 1957 तक काम किया। वर्ष 2005 में वे तब सुर्खियों में आए जब राष्ट्रपति भवन में कथित दुर्व्यवाहर के विरोध स्वरूप उन्होंने पद्म भूषण की उपाधि लौटाने की घोषणा की। उनका आरंभिक नाम विष्णु दयाल था। एक संपादक ने उन्हें प्रभाकर का उपनाम रखने की सलाह दी। विष्णु प्रभाकर ने अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। 1931 में हिन्दी मिलाप में पहली कहानी दीवाली के दिन छपने के साथ ही उनके लेखन का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह आज आठ दशकों तक निरंतर सक्रिय है। नाथूराम शर्मा प्रेम के कहने से वे शरत चन्द्र की जीवनी आवारा मसीहा लिखने के लिए प्रेरित हुए जिसके लिए वे शरत को जानने के लगभग सभी सभी स्रोतों, जगहों तक गए, बांग्ला भी सीखी और जब यह जीवनी छपी तो साहित्य में विष्णु जी की धूम मच गयी। कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, बाल साहित्य सभी विधाओं में प्रचुर साहित्य लिखने के बावजूद आवारा मसीहा उनकी पहचान का पर्याय बन गयी। बाद में अर्द्धनारीश्वर पर उन्हें बेशक साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला हो, किन्तु आवारा मसीहा ने साहित्य में उनका मुकाम अलग ही रखा।विष्णु प्रभाकर ने अपनी वसीयत में अपने संपूर्ण अंगदान करने की इच्छा व्यक्त की थी। इसीलिए उनका अंतिम संस्कार नहीं किया गया, बल्कि उनके पार्थिव शरीर को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान को सौंप दिया गया। वे सीने और मूत्र में संक्रमण तथा न्युमोनिया के कारण 23 मार्च 2009 से महाराजा अग्रसेन अस्पताल में भर्ती थे। उन्होंने 20 मार्च से खाना-पीना छोड़ दिया था। उनके परिवार में दो बेटे और दो बेटियाँ हैं।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास : ढलती रात, स्वप्नमयी, अर्धनारीश्वर, धरती अब भी घूम रही है, क्षमादान, दो मित्र, पाप का घड़ा, होरी,

नाटक : हत्या के बाद, नव प्रभात, डॉक्टर, प्रकाश और परछाइयाँ, बारह एकांकी, अशोक, अब और नही, टूट्ते परिवेश,

कहानी संग्रह : संघर्ष के बाद, धरती अब भी धूम रही है, मेरा वतन, खिलोने, आदि और अन्त्,

आत्मकथा : पंखहीन नाम से उनकी आत्मकथा तीन भागों में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई है।

जीवनी : आवारा मसीहा,

यात्रा वृतान्त् : ज्योतिपुन्ज हिमालय, जमुना गगा के नैहर मै।

सम्मान

पद्मभूषण, अर्धनारीश्वर उपन्यास के लिये भारतीय ज्ञानपीठ का मूर्तिदेवी सम्मान तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार इत्यादि। पद्म भूषण सम्मान भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है, जो देश के लिये बहुमूल्य योगदान के लिये दिया जाता है। भारतीय ज्ञानपीठ भारत में साहित्य संबंधी गतिविधियों के संवर्धन और संरक्षण के लिए कार्यरत सबसे प्रमुख और प्रतिष्ठित संस्थान है। साहित्य अकादमी पुरस्कार भारत में एक साहित्यिक सम्मान है, जो साहित्य अकादमी प्रतिवर्ष भारत की अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त प्रमुख भाषाओं में से प्रत्येक में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति को पुरस्कार प्रदान करती है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भारतीय भाषाओं के अलावा ये राजस्थानी और अंग्रेज़ी भाषा; याने कुल 24 भाषाओं में प्रदान किया जाता हैं। पहली बार ये पुरस्कार सन् 1955 में दिए गए।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
"CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
सेन्ट किसान संपर्क अभियान
CENT KISAN SAMPARK ABHIHYAN
01.07.2021 से 31.08.2021
13:39
Toll Free Number 1800-22-1911
www.centralbankofindia.co.in
Follow us on: https://twitter.com/centralbank_in
Like us on: https://www.facebook.com/CentralBankofIndia
अधिक जानकारी के लिए निकटतम शाखा से संपर्क करें।

ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी ग्राहको आप भी अपना विकास कर सकते हैं
ज़ीरो बैलेन्स से
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
सेन्ट सक्षम
ज़ीरो बैलेन्स के साथ चालू खाता खोला जा सकता है.
• निःशुल्क क्यूआर कोड के साथ झंझटमुक्त डिजिटल ट्रांज़ेक्शन.
• खाता ज़ीरो बैलेन्स के साथ खोला जा सकता है, न्यूनतम तिमाही शेष ₹ १०००/-.
• एटीएम कार्ड उपलब्ध.
• आरटीजीएस/एनईएफटी उपलब्ध.
• खाता विवरण ई-मेल के माध्यम से उपलब्ध.
• निःशुल्क इंटरनेट/मोबाइल बैंकिंग सुविधा.
अधिक जानकारी के लिए:
टोल फ्री नम्बर 1800-22-1911
www.centralbankofindia.co.in
हमें लाइक करें: https://www.facebook.com/CentralBankofIndia
हमें फॉलो करें: https://twitter.com/centralbank_in